।। भक्तमाल ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुई,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

।। अथ भक्तमाल ग्रंथ लिखंते ।।

।। दोहा ।।

सुखराम दास की बिणती ।। सुणो राम गुरू देव ।।
मे सरणागत आवीयो ।। दो अणभे तत भव ।। १ ।।

रामजी और गुरूदेवजी,मेरी बिनती सुनीए । मैं आपकी शरण में आया हूँ । तो मुझे अनुभव का (अनुभव लिए हुअे)तत्त का भेद दिजीए । ।। १ ।।

जन सुखदेव की बीणती ।। सुणज्यो हर गुर राय ।।
भक्त माल को भेद जुं ।। दीज्यो सरब बताय ।। २ ।।

मेरी बिनती हर और गुरूराय आप सुनो। भक्तमाल का सारा भेद,मुझे बता दिजीए। ।।२।।

च्यार जुगा मे संत हुवा ।। सो सब कहीये आण ।।
हिरदे हर गुर बेसकर ।। बोलो निरमळ बाण ।। ३ ।।

चार युगों में(सतगुग,त्रेता,द्वापर व कलयुग)इन चार युगो में,जो संत हो गये,वह सब मुझे आकर बताइए । हरी और गुरूदेव,मेरे हृदय में बैठकर,आप ही निर्मल वाणी(बोली)बोलिए । ।। ३ ।।

में बुध हीणा बापड़ा ।। पसुं पंखी जड़ जीव ।।
भक्त माल बिन थाह हे ।। किस बिध बरणु सींव ।। ४ ।।

मैं तो बिचारा बुद्धी हीन हूँ । मैं जड़ मती का पशु-पंखी की तरह हूँ । इसका(भक्तमाल का) नही,फिर मैं किस तरह से इसका वर्णन करूँ और अन्त लगाऊं । ।। ४ ।।

अनंत जुगा आगे हुवां ।। संता वार न पार ।।
मेरी क्या जड़ जीव की ।। सब जन बरणु लार ।। ५ ।।

ये संत तो अनन्त युगों के पहले हो गये,इन संतो का कोई वार-पार या थाह लगता नही। मेरे इस जड़ जीव की क्या बुद्धी है,कि पूर्वकाल में हुए सभी भक्तो का वर्णन कर सके।५।

संता के प्रताप सुं ।। गुर सरणा गत जाय ।।
भक्त माल सुखराम क्हे ।। मे जुग बरणु आय ।। ६ ।।

तो मैं अब संतो के प्रताप से,गुरू की शरण में जाकर,यह भक्तमाल संसार में वर्णन कर रहा हूँ । ।। ६ ।।

साहिब किरपा किजीयो ।। गुर गोविन्द हरी आन ।।
जिण बिध जेसा संत हुवा ।। त्यूं त्यूं कहो बखाण ।। ७ ।।

हे मालिक,आप कृपा करो और गुरू,गोविन्द और हरी आप भी आकर कृपा करो । जिस विधी से,जिस प्रकार के,जैसे संत हुए होंगे,वैसे आप मुझे वर्णन करके,बताइये । ।। ७ ।।

सुणज्यो मे निरदोस हुँ ।। घाट बाध जस होय ।।
तुम हर बोलण हार हो ।। क्या जाणेगा कोय ।। ८ ।।

संतो के यश का वर्णन करने में,मुझसे कम अधिक हुआ तो,मैं तो निर्दोष हूँ । मेरे अन्दर बोलने वाले आप ही हो । फिर मुझे दोष किसका और कोई भी क्या जानेगा । मेरे अन्दर बोलनेवाले तो आप ही हो । फिर किसी भी संत के यश का वर्णन,कम अधिक हुआ,तो उसका मुझे दोष कैसा । || ८ ||

रेखता ||

संत सुखरामजी अब सो बोलिया || क्रत प्रणाम लुळ पाय लागा ||
किनक डंडोत पचास गुरदेव कुं || ओर सब संत कुंई जाग जागा || ९ ||

अब मैं बोलता हूँ ,प्रणाम करके,झुक-झुककर पैर पड़ता हूँ । गुरूदेव को पचास कनक दंडवत है और दूसरे सभी संतो से,जगह की जगह पर,जैसे संत होंगे,उस प्रमाण से,सभी को जगह- जगह दंडवत है । || ९ ||

संत को साध अवतार जुग सिध हे || श्रब सो बंदना मान लाज्यो ||
भक्त को जस मे दिल भरकेंत हुँ || श्रब सो जन म्हाय आय रीज्यो || १० ||

संत और कोई साधू के अवतार,संसार में सिद्ध हो,तो वे सभी जन,मेरी वन्दना मान लेवे । भक्त का यश में मेरा दिल भरकर कह रहा हूँ । सभी जो संत जन हो,वे सभी मेरे अन्दर आकर रहीए(और अपना यश,आप ही मेरे मुख के द्वारा,बोला दिजीए ।) || १० ||

आद अनाद असंख जुग बीच मे || साध संसार में जोय होई ||
दास सुखराम के श्रब चल आवज्यो || दोस मत दीजायो मोय कोई || ११ ||

आदी अनादी से अनन्त युगों में,जो-जो इस संसार में साधू हुए,वे सभी मेरे अन्दर चले आईये और अपने-अपने यश,आप स्वयं ही कह दिजीए । आप सब का यश,कम-अधिक कहे जाने पर,मुझे कोई दोष मत दो । || ११ ||

मुझ प्रणाम डंडोत सब मानज्यो || संत गुरदेव गोविन्द सांई ||
बंस की लाज हरी आपको बिड़द हे || मध की चाल मत देख माही || १२ ||

मेरा तो आप सभी दंडवत प्रणाम मान लिजीए । सभी संत,गुरूदेव,गोविन्द और स्वामी आपके वंश की(यानी मैं ब्रम्हा के वंश का हूँ ।)उस आपके वंश की लाज और हरी आपका बिड्द है । उसे आप सम्हालो,परन्तु बीच में मेरी चाल मत देखीए । || १२ ||

ग्यान किरपाल गुरदेव दयाल हो || मोख प्रमोख का आप दाता ||
दस प्रकार की भक्त संसार में || जोय जन कीन सोई कहो गाथा || १३ ||

आप गुरूदेवजी,ज्ञान देनेवाले कृपाल और दयाल हो । मोक्ष का और परम मोक्ष के दाता आप हो । जिन-जिन संतो ने,इस तरह की भक्तीयों में,जिस-जिस विधी की भक्ती कि,वह सभी गाथा,मुझे बताओ । || १३ ||

आद अनाद को मूळ ले बोलज्यो || अरज गुरदेव सो मान लाजो ||
दास सुखराम के भक्त को जस हे || भेद बिचार सो सर्ब दीजे || १४ ||

आदी अनादी का मूल लेकर,मुझे बताईए । गुरूदेवजी,मेरी सारी अर्जी आप मान लो । यह जो मैं कह रहा हूँ ,वह भक्तों का यश है । इसका सब भेद और विचार मुझे दो । ।।१४।।

दोहा ॥

सुखराम कहे सब सांभळो ।। चित मन सुरत लगाय ।।
भक्त माळ जस सुण तरे ।। अंग अंस सब जाय ।। १५ ।।

मैं कह रहा हूँ ,उसे सभी चित्त और मन लगाकर सुनो । यह भक्तमाल सुनने से,सारे पापों का अंश चला जायेगा । ।। १५ ।।

भ्रम क्रम अज्ञानता ।। होय तिवर को नास ।।
भक्त अंस घट ऊपजे ।। मिले आद घर बास ।। १६ ।।

यह भक्तमाल सुनने से,भ्रम का,कर्मो का और भक्ती का अंश,घट में उत्पन्न होगा । और आदी घर का निवास प्राप्त कर लेगा । ।। १६ ।।

रेखता ॥

बोलीया संत सुखराम सो आद ले ।। ब्रम्ह की ओड सुं संत बरणे ।।
धिन क्रतार सो केवली ब्रम्ह हे ।। देह धर सकल सो रेत सरणे ।। १७ ।।

अब मैं,आदी से संतो का वर्णन करता हूँ । ब्रम्ह के पास से आये हुए संतो का,वर्णन मैं कर रहा हूँ । हे करतार,तुम धन्य हो और कैवल्य ब्रम्ह,तुम धन्य हो,ये सभी शरीर धारण करके ,तुम्हारी शरण में रहता हूँ । ।। १७ ।।

पांच पर तीन तत्त आद सु ऊपना ।। मांड बिस्तार हरी खूब मांडी ।।
रूप अनरूप आकार बिन देव तूं ।। छिनक के मांह पल जाह छाड़ी ।। १८ ।।

ये पाँच तत्त्व और तीन गुण,सर्व प्रथम उत्पन्न हुआ । इस सृष्टी का विस्तार हरी ने खूब बनाया । तुम्हारा कोई रूप नही है । तुम अरूपी देव हो । तुम आकार के बिना,निराकार देव हो । तुम एक ही क्षण में,एक ही पल में (   ) ।। १८ ।।

मुख भर तोह क्या बिड़द दे गाईये ।। धिन तुही धिन तुही राम राया ।।
दास सुखराम के तीन तिरलोक में ।। तोहि शिर ओर नही देव क्राया ।। १९ ।।

भर मुँह तुम्हारा बिड़द क्या गाऊँ । हे रामराय,तुम धन्य हो । इस तीन लोक में,त्रिलोकी में, तुम्हारे उपर दूसरा कोई भी देव नही है । ।। १९ ।।

धरण ब्रहमंड आकास मे ध्यान हे ।। सकळ नख चख मे साम सोई ।।
केवळी ब्रम्ह आरब करतार तुं ।। हंस प्रमहंस में अलख होई ।। २० ।।

तुम्हारा धरती,ब्रम्हाण्ड और आकाश में ध्यान है,क्यों कि तुम सर्वव्यापी हो । सारा नाखून से लेकर आँखो,तक तुम व्याप्त हो । कैवल्य ब्रम्ह तुम्ही हो और कर्तार भी तुम्ही हो । आरब्ब (पालन कर्ता) भी तुम्ही ही हो,परन्तु अलख(दिखाई नही देता ऐसा)है । ।।२० ।।

राम रहीम रमत ही तुं धिन हे ।। आप को पार कोई नाहि लेवे ।।
तारणो होय ज्या अंग में प्रगटे ।। मारणो होय ज्या माहे ऊठे ।। २१ ।।

तुम राम हो,(सभी में रमन कर रहे हो ।) तुम रहीम हो,(तुम सबके उपर रहम हो ।)तुम सबमें रमन कर रहे हो,तुम धन्य हो । तुम्हारा पार किसी को भी नही मिलता है । तुम्हे जिसे तारना होगा,तो उसके ही शरीर में तुम प्रगट हो जाते हो । और तुम्हे जिसे मारना होगा,तो उसे तुम उसके शरीर में प्रगट हो जाते हो और उसे मार डालते हो । || २१ ||

----------------||----------------||

दास सुखराम के धिन करतार तुं || राम बेमुख कहु नाह छूटे || २२ ||

तुम करतार धन्य हो । जो रामजी से बेमुख है,वे कही भी नही छूटेंगे । || २२ ||

ब्रम्ह सुं सुन सुण सुन को मुन हे || मुन सुं बाय प्रकास होई ||
तेज मे आन सो निरंजन ऊपनो || प्रथमी मुळ वां होय लाई || २३ ||

ब्रम्ह से सुन्न हुआ और सुन्न से मुन्न हुआ(आकाश हुआ।)मुन्न से वायु हुआ और वायु से आग उत्पन्न हुयी । आग से पानी उत्पन्न हुआ उस पानी में से पृथ्वी उत्पन्न हुयी। ||२३||

प्रगती मुन में बिरज तत्त ज्यानीयो || सगत ओऊँकार यांहाँ जन्म जाणो ||
म्हा मुन आद नारायण लिछमी || तीन सो देव को श्रूप ठाणो || २४ ||

शक्ती ऊँकार के यहाँ जन्मी । महाशुन्य आदी से नारायण और लक्ष्मी उत्पन्न हुए । उस शक्ती से तीन देवों का स्वरूप हुआ । || २४ ||

अंस श्रूप ऊंसास सो ऊपनो || जोत मुनी आण प्रकास कीया ||
दास सुखराम केहे सक्त सहे तजुं || मांड सीव को भेव दीया || २५ ||

उनका अंश स्वरुप,सभी में प्रकाश हुआ,वह ज्योती मुनी आकर प्रकाश किया । शक्ती के साथ आकर,पृथ्वी की रचना का,शिव को भेद दिया । || २५ ||

विस्न ब्रम्हा ज्युं सिव सो प्रगटया || तीन तिरलोक रचाय दिया ||
देव मानव पस पंख बनासती || च्यार सो खाण म सर्ब कीया || २६ ||

ब्रम्हा,विष्णू और शिव ये प्रगट हुए । और इन तीनों ने त्रिलोकी की रचना किया । और तीन गुण(रज,तम और तम)इस पृथ्वी के जीवों के लिए भेद दिया || २६||

तीन गुण मांड सो जीव ले बेचीया || देव सब लोक को बंध बांध्यो ||
इन्ड कटाक्ष चहुँ दिस सो फेलीयो || क्रोड पचास लग मेर सांध्यो || २७ ||

देवताओं का और सभी लोगों का,अलग-अलग बांध बांधा । यह अण्डकटाक्ष चारो दिशाओं में फैल गया । इसकी पचास कोटी योजन तक,इसकी मेर बांधी । || २७ ||

लिछमी गवर ज्यां सेज सायत्री || सगत प्रणाम संजोग कीया ||
दास सुखराम के ऋष वा ऊपना || उलट ब्रम्हा कुं ग्यान दीया || २८ ||

लक्ष्मी,गौरी और सावित्री इन्होने,शक्ती के प्रमाण से संयोग किया ।(स्त्री-पुरुष मैथून करके, प्रजा उत्पन्न करे । मैथून कैसा करना,किस तरह से करना चाहिए,इसकी सारी जानकारी शक्ती ने बता दिया । शक्ती के बताने के पहले,स्त्री-पुरूषों को मैथून करने

की रीती,मालुम नही थी । शक्ती के बताए अनुसार,विष्णू ने लक्ष्मी से,ब्रम्हा ने सावित्री से और शंकर ने गौरी से संयोग किया ।)इसी में ऋषी उत्पन्न हुए । इन्होने उलटकर(पलटकर)ब्रम्हा को ज्ञान दिया । ।। २८ ।।

च्यार सो बेद ब्रम्हाजी बोलीया ।। मेर म्रजाद सब बांध दीवी ।।
सुभ असुभ ऊपाय संसार में ।। जुग की जुग जिण मांह कीवी ।। २९ ।।

ब्रम्हा ने चार वेद बोला । उस वेद में सभी मेर मर्यादा बांध दिया । शुभ और अशुभ सभी संसार के उपाय,जगत की जगत में,जिसकी उसकी संसार में बनाया ।।२९ ।।

बावना मांही सब नांव ले आवीया ।। दस सो मात में भ्यास सारी ।।
राग छतीस में कंठ की मोड़ हे ।। तत्त को भेव सुण भेद लारी ।। ३० ।।

इन बावन अक्षरों में सब कुछ लिखा जाता और दस मात्रा में एक सारी भाषा बोली जाती है । और छत्तीसों तरह के राग कंठ की मोड में हैं । और इस तत्त्व का भेद भेद के पीछे है । ।३०।

जुग का जुग अवतार सो बर्णीया ।। देत ज्युं दाण वा भाष दीया ।।
दास सुखराम के धिन ब्रम्हा तुं ।। ध्रम हर क्रम का धाम कीया ।। ३१ ।।

और युगों के युगों में,सभी अवतार बताया । राक्षस,दैत्य और अवतार ये सभी बता दिया । ब्रम्हा तुम धन्य हो,तुमने जीवों के लिए,धर्मो के और कर्मो के,अलग–अलग धाम बनाये ।३१।

साठ सो पुत्र नारद के ऊपना ।। व्रस का नाम अे रख सारा ।।
बीस सो बिस्न भगवान कुं सुंपीया ।। बीसही ईस के चरण प्यारा ।। ३२ ।।

नारद जब स्त्री बने थे,तब नारद को साठ पुत्र पैदा हुए थे। उन्ही पुत्रों के नाम पर साठ सम्बतसरों के,अलग–अलग नाम रखे। उसमें से बीस सम्बतसर विष्णू को सौंपा।(उनके नाम–१–भाव,२–युवा,३–धाता,४–ईश्वर,५–बहुधा,६–प्रथी,७–विक्रम,८–व्रष,९चित्रभानु ,१०–सभानु,११–तारण,१२–पार्थिव,१३–व्यव,१४–सर्वजीत,१५–सर्वधारी,१६–विरोधी, १७–विक्रती,१८–श्वर,१९–नंदन,२०–विजय)उनमें से बीस सम्बतसर महादेव की चरणा में अर्पण किया।(उनके नाम–१–जय,२–मन्मथ,३–दुर्मुख,४–हेमलंबी,५–बिलंबी,६–विकारी,७–सार्वरी,८–प्लव,९–शुभकृत,१०–शोभन,११–क्रोधी,१२–विश्वासु,१३–पराभव ,१४–प्लवंग,१५किलक,१६–सौम्य,१७–साधारण,१८विरोधकृत,१९–परीधावी,२०प्रमादी) और बचे हुए ब्रम्हा ने अपनी शरण में रखा।(बचे हुए २० के नाम–१–आनन्द,२–राक्षस,३–अनल,४–पिंगल,५–कालयुक्त,६–सिद्धार्थी,७–रौद्र,८–दुर्मती,९–दुंदुभी,१०–रूधिरोद्वारी,११–रक्ताक्षी,१२–क्रोधन,१३–क्षय,१४–प्रभव,१५–विभव,१६–शुक्ल,१७–प्रमोद,१८–अंगारा,२०–श्रीमुख ये ब्रम्हा ने लिए ।) ।।३२।।

दुज की सरण सो बीस रेविया ।। ऋष यूं देवता बेच लीया ।।

ओसरा ओसरी सरब सो प्रगटे ।। ताह की बीसीया नाम दीया ।। ३३ ।।

इनके ये सम्बतसर तीनों देवताओं ने बाँट लिया। ये सम्बतसर सालों–साल,एक–एक प्रगट होते रहते है। और वे अपना–अपना अलग गुण,अलग–अलग प्रगट कर देते है ।(इन सम्बतसरों का फल ज्योतिष में अलग–अलग बताया है। वे अपने–अपने गुण प्रगट रूप से देते रहते है। उनमें से एक सम्बतसर साठ वर्षो में आता है । ये बीस–बीस,अलग–अलग बीसी नाम कहते है। लोग कहते है,कि यह ब्रम्हा की बीसी है,विष्णू का सम्बतसर आने पर विष्णू की बीसी है और महादेव का सम्बतसर आने पर,यह महादेव की बीसी है । यानी उसी के प्रमाण से फल देते है।) ।।३३।।

देव तिण देव का ऋष यां प्रगटे ।। जक्त मे भक्त सो होय जोर ।।
दास सुखराम के ग्यान कर देखीयो ।। अमल की बात कुं कोन मोर ।। ३४ ।।

जिस देवता का सम्बतसर आता है,उसी देवता की भक्ती यहाँ,उस बीस वर्ष में अधिक फैलती है। यह ज्ञान करके देख लो। परन्तु इनके उपर अमल की(वरीष्ठों की बात)(ब्रम्ह की बात), ये कोई नही तोड़ सकता। ।।३४ ।।

विसन की बीसीया विसन जन ऊपजे ।। दुज की बीसीया बीप्र जोरे ।।
शिव की जाण सिन्यास में पोख हे ।। ब्रम्ह की भक्त कौ नहि मोरे ।। ३५ ।।

विष्णू का जब सम्बतसर आता है,तो इस बीस सम्ब्तसर में(विष्णू के सम्बतसर में)विष्णू के संत उत्पन्न होते है। और विष्णू की भक्ती जोर से आती है ।(विष्णू के सम्बतसर में खेती की उत्पत्ती की जाती। लोग खा–पीकर सुखी रहते है ।)ब्रम्हा की बीसी के सम्बतसर जब आते तो उस समय ब्राम्हण का धर्म जोर से होती है ।)और महादेव के बीस सम्बतसरों में सन्यासी अधिक रहते है। सन्यासी का धर्म जोर से चलता है ।(महादेव के सम्ब्तसर में जीवों का नाश होता है,मनुष्य का संहार हर तरह से रोग से या लड़ाई से मारामारी से और अकाल से होता रहता है। और दूसरे जीवों का भी इस सम्बतसर में नाश होता है। यह सब विशोत्री के हिसाब से भक्ती कम अधिक होती है ।) परन्तु ब्रम्ह की भक्ती कभी भी कोई भी पलटा नही सकता है। ।। ३५ ।।

फेर सुण देवतां गुंझ ओ बांधियो ।। भक्त ब्रणाम सो जीव लेणा ।।
जाब ते काज जुग दरसणी मे लीया ।। यूं ऊत का जाब सो इत केणा ।। ३६ ।।

और भी इन देवों ने ब्रम्हा, विष्णू व महादेव ने यह गुह्य बांधा । भक्त वर्णाव सो जीव लेणा।(अपनी–अपनी भक्ती करने वाले,अपने–अपने जीव बाँट लिए ।)( ) और इस संसार में अपने–अपने वर्णो के धर्मो का,जतन करने के लिए छ:दर्शन भेजे । वे दर्शनी करने के लिए आये । ।। ३६ ।।

ब्रम्ह की भक्त या तीन मत बाहीरी ।। ताहि पच सुण हे देव धारे ।।
दास सुखराम के सरण बिन जीवरे ।। तांही कुं सोझ कर काळ मारे ।। ३७ ।।

परन्तु यह ब्रम्ह की शक्ती,इन तीनों के ही(ब्रम्हा,विष्णू ,महादेव)इनके मतों से निराली है। इस ब्रम्ह की भक्ती को,ये देव भी धारण करते है । और ब्रम्ह की भक्ती करने के लिए पचते है। परन्तु उस ब्रम्ह की शरण में जो नही है,उन्हे काल खोज कर मारता है। ।।३७।।

क्रत पेदास दुज जीव अस थूलसो ।। बिसन भगवान पर पोष देवे ।।
भ्रम का जाळ सो सगत के हात हे ।। मार सिंघार जुं शिंभू लेवे ।। ३८ ।।

इन जीवों की उत्पत्ती ब्रम्हा करता है । जीवों को स्थूल शरीर ब्रम्हा देता है । और विष्णू सभी जीवों का पालन पोषण करता है ।(स्थिती करता है ।)और इन सभी जीवों को भ्रम में डालने के लिए,भ्रम का जाल शक्ती के हाथों में है ।(सभी जीवों को भ्रम में शक्ती डालती है ।)सभी जीवों को मारना,संहार करना,शंभू के आधीन है ।(जीवों को मारना और संहार करना,शंभू करता है ।) ।। ३८ ।।

राकसी अंस संसार मे ऊपजे ।। भक्त मे आण जब भीड़ पारे ।।
आप क्रतार अवतार तब धार के ।। दुष्ट कुं घेर शिर घाव मारे ।। ३९ ।।

राक्षसी वंश संसार में उत्पन्न होते है । वे राक्षस आकर भक्तो पर संकट डालते है । तब वह कर्तार स्वयं खुद अवतार लेकर,उस दुष्ट राक्षस को घेर कर,उस राक्षस का शीर मारता है । (घाव मारकर तोड़ता है ।) ।। ३९ ।।

राकसी होय जड़ जीव इण बात सुं ।। संत सराप दे आड कोई ।।
दास सुखराम के विसन की पोल ज्यां ।। दाणवा सरब उन जाग होई ।। ४० ।।

(ये राक्षस इस पाप से होते है।)ये संतो के आड़े आते है । तब संत इन्हें श्राप दे देते है । उस संत के श्राप के कारण,ये राक्षस(पैदा)होते है। ये विष्णू के दरवाजे के पास द्वारपाल जो है,वही से सभी राक्षस(पैदा)होते है ।(विष्णू के द्वारपाल सभी राक्षस होते है ।)।।४०।।

क्रोड़ तेतीस सुण देवता जात हे ।। ताय मध ईद ईधकार होई ।।
सेस अठरास सुत ब्रम्हा के ऊपना ।। ताहि सुं मांड बिस्तार लोई ।। ४१ ।।

इन देवताओं की तैतीस कोटी देवताओं में,इन्द्र का अधिकार सभी से अधिक है ।(यह इन्द्र तैतीस कोटी देवताओं का राजा है ।)ब्रम्हा के अठ्ठासी हजार पुत्र उत्पन्न हुए । उस ब्रम्हा से इस पृथ्वी का विस्तार हुआ । ।। ४१ ।।

सिनकादिक सुण बिसन का च्यार हे ।। शिष का तीन गण मान लीजे ।।
पूरणा ब्रम्ह या सकळ मे रम रहया ।। भज करतार कुं काज कीजे ।। ४२ ।।

उनमें से चार सनकादिक(सनक,सनन्दन,सनातन,सनतकुमार) ये चार विष्णू के शिष्य हुए । और शिव के तीन गण हुए । वह पूर्ण ब्रम्ह सभी में रमन कर रहा है ।(रमन कर रहा है, इसीलिए उसे राम कहते है ।)उस करतार को भजकर,अपना कारज कर लो । ।। ४२ ।।

सरब सो देव आधीन उण देव के ।। भीड़ मे चाल अवतार आवे ।।
दास सुखराम के सारदा नारदा ।। रिष जोगीसरा सरब गावे ।। ४३ ।।

ये सभी देवता,उस देव के आधीन है । उसके आधीन संतो के उपर संकट पड़ने पर,वह चलकर आकर अवतार लेता है । शारदा और नारद ये सारे ऋषी और सभी योगेश्वर उसे भजते है । || ४३ ||

श्लोक ||

कळ जुग मधे || रिष सुखरामं || बोलेस बाणी || चड़ सत्त धामं ||
भक्त सी माळा || पोऊस अैसे || जुग जुग संत हुवा सिध तेसे || ४४ ||

और कलियुग में ऋषी सतगुरू सुखरामजी महाराज हुये । वे सतगुरू सुखरामजी सत्तधाम में चढ़कर वाणी(ज्ञान)बोले । अब मैं भक्तमाल(भक्तो की माल इस तरह से)पिरोता हूँ । युगों–युगों में,जैसे–जैसे संत हुए,वैसे–वैसे इस भक्तों की माला में,पिरोता हूँ । || ४४ ||

जुग च्यार आदं || त्रित जुग मधें || राजास ब्रम्हा तप ध्यान संधे ||
अेकीज सम्यं पुस्तंग रागो || हरे बेद च्यारूं संखासुर भागो || ४५ ||

इन चार युगों के आदी में कृतयुग में,ब्रम्हा के राज्य में तपश्या और ध्यान साधते थे । एक समय,लक्ष्मी ने एक पुत्र उत्पन्न किया,वह पुत्र ऐसा दुष्ट था,कि उसने ब्रम्हा का वेद चुराकर, लक्ष्मी के पास लेकर भाग गया।(तब लक्ष्मी उसके दुष्ट कर्म देखकर,उससे बोली,अरे,यह तुमने क्या किया। तुम्हारे पिता नींद से उठेंगे,तो तुम्हे मारेंगे । इसलिए तुम भाग जाओ। तब ब्रम्हा ने पुकार किया,तब चोर को पकड़ने के लिए,विष्णू ने)(यह शंखासुर वेद पानी में लेकर बैठा था)। || ४५ ||

तब राम सांमो धर मच्छ रूपं || किवि बेद बारंग || तपे धाम धुपं ||
धऱ्यो मछ रूपं धसे संमद मांही || जोये सब नीरं || पायो दुष्ट नाही || ४६ ||

उसे पकड़ने के लिए विष्णू ने,मत्स्य का रूप धारण करके गये । यह शंखासुर वहाँ से भागा । और पीठ पीछे विष्णू आ रहे थे,ऐसा देखकर,वह विष्णुसे डरकर,वहाँ घोडे चर रहे थे,उनमें घोड़ा बन गया। तब विष्णू ग्रीव का अवतार लेकर गये और अपनी जाती के स्वभाव जैसा, सभी घोड़ों की नाक सूंघने लगे। घोड़े की नाक सूंघते–सूंघते,शंखासुर घोड़ा बना था। उसके पास गये और उसकी नाक से नाक लगाकर,वेद श्वांस के द्वारा खींच लिया । और वह शंखासुर डरकर भाग गया। और समुद्र में जाकर बैठ गया ।||४६||

तबे कछ रूपं || धऱ्यो राम सोही || गिलिगार सारी लियो जळ जोही ||
करपांण स्याया संखो मरोडे || लिया बेद चारी दातो नो तोडे || ४७ ||

तब विष्णू ने मत्स्य का रूप धारण करके,पानी में खोजने लगे । उस धाम मे समुद्र मे तपने लगा । तब शंखासुर डरकर समुद्र में,गारे में जाकर छुपकर बैठ गया । इसलिए गारे बैठा,की मच्छ गारे में नही जा सकता है । मत्स्य सिर्फ पानी में ही जा सकता है । मत्स्य सिर्फ पानी में ही देखेगा। और मैं पानी में नही मिलूंगा,तो वापस लौट जायेगा । मैं गारे में धँस जाऊंगा। तो मत्स्य मेरे पास नही आयेगा । परन्तु शंखासुर पानी में नही मिलने

पर,विष्णू ने सोचा,की शंखासुर गारे में जरूर धँसा होगा । ऐसा सोचकर,विष्णू कछुवा बन गये। तब विष्णू कछुआ बनकर गारा निगलने लगे। तब शंखासुर डरा,की अब मुझे मार डालेगा। इसलिए वह,वहाँ से भी भागा और एक विष्टा की ढ़ेरी थी,उसमें शंखासुर धँस गया । और सोचा कि,विष्णू देव होने से,ये विष्टे की ढ़ेर में नही आयेंगे और अब तो भी मुझे,विष्टा से नही निकाल सकते। क्यों कि ये विष्णू देवता है । वे लोगों की विष्टा में नही घुसेंगे। इधर विष्णू ने,कच्छ रूप से सारा गारा खा लिया। तो भी उन्हे वह दुष्ट शंखासुर नही मिला । तब शंखासुर के पैरों के चिन्ह देख-देखकर,उस विष्टे की ढ़ेरी के पास आया । विष्णू ने सोचा कि,इस विष्टे में से इसे कैसे निकालू? फिर ऐसा विचार किया कि,दूसरे रूप से विष्टा को छिन्न-भिन्न नही किया जा सकता है। विष्टा को तो सिर्फ सुअर ही छिन्न-भिन्न करता है और खाता भी है। इसलिए विष्णू ने,सुअर का रूप धारण करके,विष्टे की ढ़ेर को छिन्न भिन्न करके,शंखासुर को दोनों हाथों से पकड़कर,जोर से मरोड़ा। उस दिन से शंख में,अन्दर एक हाथ से पकड़ने का, अंगुलीयों का निशान रहता है और दूसरे हाथ से मरोड़ने का चिन्ह,शंख की तरफ अभी भी उत्पन्न होता है । || ४७ ||

दीया दुज सेती सुणो बेद च्यारी || गये मछ कछं सबे काज सारी ||
अबे अवतार सुणो अेक दाणु || बराहा नर सिंघ जुगो बखाणू || ४८ ||

इस तरह से शंखासुर को मारकर,वेद ब्रम्हा को दिया। इस तरहसे अपना कार्य करके ,मच्छ-कच्छ चले गये,अभी अधिक एक राक्षसका अवतार सुन,उनके लिए वराह और नरसींह का जगत मे अवतार हुआ || ४८ ||

हिर्णास दाणू दुजोबर जाणी || फटे ऊर जोसां तबे बुझे आणी ||
मुझे आप अेसो बताओस आई || लडे बांह जोड़ी करूं जुध जाई || ४९ ||

हिरण्याक्ष राक्षस द्विज के(ब्रम्हा के)वरदान से अति प्रबल हो गया। वह इतना बलवान हो गया। कि उसने लड़ाई करके,सभी को जीत लिया। और लड़ाई के लिए कोई बचा नही,तब और अधिक जोर आया। जोर इसके हृदय में समाता नही था। इसकी भुजाएं फड़कने लगी।(लड़ाई के लिए बाहें फड़कने लगी।)तब यह ब्रम्हा के पास आकर पूछने लगा कि मुझे कोई मुझसे लड़नेवाला ऐसी कोई बताओ । कि उससे लड़कर मेरे मन की हौस पूरी करूँ। तुम ऐसा कोई मुझे बताओ,कि मैं मेरी बाँह निकालूँ ,तो वह बाँह मिलाकर,मुझसे युद्ध करे । ऐसा कोई बताओ,कि जिससे जाकर मैं युद्ध करूँ । || ४९ ||

तबे दुज बोले नहि कोय अेसो || करे हात जोड़ा लडे तोह जेसो ||
हिर्णाष केहे जुग रहुँ कौण घाटे || मेरी ऊर बाहियाँ नितो बोहोत फाटे || ५० ||

तब ब्रम्हा ने कहा,कि तुम्हारी बराबरी में युद्ध करने वाला,ऐसा कोई दूसरा नही है । की जो तुमसे बाँह से बाँह मिलाकर,तुमसे युद्ध करे । ऐसा कोई भी संसार में दिखाई नही

देता है। तब हिरण्याक्ष बोला,कि अब मैं कहाँ जाकर रहूँ । मुझे लड़ाई किए बिना,मेरे हृदय में जोश है । जिससे मेरी बाँहे नित्य-नित्य फड़क रही है । ।। ५० ।।

तबे दुज धूजे काहां अब कीजे ।। दाणु बोहोत जोरे किम बस लीजे ।।
विस्न शिव पासे गये दुज धाई ।। उपनो हे दाणु करो जुध आई ।। ५१ ।।

तब ब्रम्हा काँपने लगा,अब क्या करना।(युद्ध करने के लिए,यह मुझसे भिड़ गया,तो मैं क्या करूंगा। इससे युद्ध करने की तो मेरे अन्दर उतनी ताकत नही है,ऐसा देखकर)ब्रम्हा डरकर धूजने(काँपने)लगा,कि अब क्या करना,यह राक्षस बहुत जोर में आया हुआ है,इसे अब कैसे वश में करे। तब ब्रम्हा दौड़कर विष्णू और शिव के पास गया और ब्रम्हा ने कहा ,कि यह राक्षस उत्पन्न हुआ है,इससे युद्ध करो ।। ५१ ।।

तबे शिव बोले नहि पांण मोई ।। कहो बिस्न सेती करे जुध जोई ।।
तिहुँ देव अेके करी गुष्ट आई ।। दाणु बोहोत जोरे संभे नहि भाई ।। ५२ ।।

तब महादेव ने कहा,कि इस राक्षस ये युद्ध करने की ताकद,मुझमे नही है । आप चलकर विष्णु को बतावो,यानी विष्णु इससे युद्ध करेगा,इन तीनों देवताओं ने मिलकर बात किया। विष्णू ने भी कहा,कि यह दानव बहुत जोरदार है। यह हमसे सम्हाला नही जायेगा। ।५२।

हवे दुज बोले सुणो हिर्णाका ।। तोसे जुध करणे हारो ब्रम्ह बांका ।।
कहे हिर्णाको बतावोस मोई ।। किण देश जागा रह ब्रम्ह सोई ।। ५३ ।।

तब ब्रम्हा ने कहा,हिरण्याक्ष सुनो । तुझसे युद्ध करने वाला एक ब्रम्ह ही है । तब हिरण्याक्ष बोला,कि वह ब्रम्ह मुझे बताओ । वह किस देश में है,वह ब्रम्ह किस जगह पर है,ब्रम्ह किस जगह पर रहता है । ।। ५३ ।।

कहे दुज भेवा नहि ठोड़ ठामा ।। मुझ तुझ मांही रमे स्याम रामा ।।
किसे बेत पाऊँ लडु केम सोई ।। कहे हिर्णाक बतावोस मोई ।। ५४ ।।

तब ब्रम्हा बोले,उसकी रहने की जगह या स्थान कही भी नही। वह तुझमें और वह स्वामी,सभी जगहों पर व्यात्प हो रहा है। तब हिरण्याक्ष बोला,कि उसका गाँव नही,उसका देश नही,कोई स्थान नही और वह तुममें और मुझमें सभी में है,कहते हो,तो उससे मैं किस तरह से लढूं?हिरण्याक्ष बोला,मुझे आँखों से दिखाओ। ऐसे मैं नही मानूँगा। ।।५४।।

कहे दुज भेवा सुणो जख आणी ।। आराध्या आवे बिरोध्या जाणी ।।
हिर्णाक तब मन आ उर धारी ।। कर धर ऊँधी मारूँ रेत सारी ।। ५५ ।।

तब ब्रम्हा ने कहा,कि यक्ष सुनो। तुम उसकी आराधना करके बुलाओ। या उसका विरोध करो,जिससे वह आ जायेगा। तब हिरण्याक्ष ने,मन में ऐसा विचार किया,कि इस पृथ्वी को हाथ से पकड़कर,उल्टी करके,सारी प्रजा को मार डालूँ। तब वह स्वयं ही आयेगा।।।५५।।

आंकस मारे धरण हलाई ।। तने अंग काया पसिनोस आई ।।
फेरेस हाथं भ्रगुटी ज सीसा ।। तब जंवार जेसा कर बिच दीसा ।। ५६ ।।

तब हिरण्याक्ष ने,धरती पर अंकुश मारकर,धरती हिलाने में जोर लगने के कारण,उसके शरीर पर पसीना छूटा। वह पसीना पोछने के लिए,अपना हाथ कपाल पर,भृगुटी पर घुमाकर, पसीना पोछने लगा,तब उसके हाथ में,ज्वार के दाने जैसा फफोला,आया हुआ दिखाई दिया । || ५६ ||

कर बीच निरखे क्या यह होई || अठा पहल ऐ वो देख्यो न कोई ||
बघे इण्ड ऐसे घड़े मूण क्रावे || अब जख हाथ संभे नहि मावे || ५७ ||

तब हिरण्याक्ष ने हाथ में देखा,कि यह क्या हो गया। इसके पहले ऐसा मेरे हाथ में,फफोला बना हुआ,कभी नही देखा । वह ज्वारी के इतना बड़ा फफोला,बढ़कर अंड़े के इतना बड़ा हो गया। अंडे इतने बड़े से,बड़े मटके इतना हो गया। अब वह इतना बड़ा हो गया,की उस राक्षस के हाथ में,सम्हाला नही जाता था । हाथों में समाने से अधिक हो गया। || ५७ ||

तब राव दाणु कर हाथ डार्‍यो || इण्ड मांहि भगवान अवतार धार्‍यो ||
मुख मांही तिरलोक सब जुग लीया || बाराह हिर्णाक इम जुध कीया || ५८ ||

जब हाथ सम्हाला नही गया,तो हिरण्याक्ष ने हाथ नीचे रखा । उसके हाथ के अंडे में से,पहले जो शंखासुर को मारने के लिए सुअर बना था,वही वराह रूप से उसमें से अवतार निकला। और उसने जगत को और त्रिलोकी को मुँख में ले लिया। वह वराह, हिरण्याक्ष राक्षस से लड़ने लगा और अब वराह और हिरण्याक्ष ऐसे युद्ध करने लगा।।५८।।

जुटे सेस बरसं कियो जुध भारी || मारे हिर्णाक किया टूक फारी ||
प्रथी प्रत पाल इस्या राम राया || जिवा काज दोड़े धरे रूप आया || ५९ ||

इस तरह से हजार वर्ष तक भिड़कर,एक दूसरे से बहुत भारी युद्ध किए । हिरण्याक्ष को मारकर,उसे चीर दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इस पृथ्वी का प्रतीपाल करनेवाला,ऐसा वह राम है। वह कार्य के लिए,सुअर का रूप लेकर,दौड़कर आया।।।५९।।

सुणो संत सारा सबे मांड आणी || हरे ब्रम्ह साचा जपो सेंग प्राणी ||
सबे मांहे देवा भरपूर होई || केहे सुखदेवजी रटो सर्ब जोई || ६० ||

सभी सन्त भी सुनो और पृथ्वी के सारे लोगों भी सुनो। वह ब्रम्ह सच्चा है। सभी प्राणी उसे सुनो और जपो। वह देव,सभी में भरपूर है। उसे सभी जन देखकर,उसकी रटन करो ।६०।

प्रब्रम्ह केसो करतार सांई || तिर लोक ज्याहाँ त्याहाँ भरपूर माई ||
सास उसासे हर जाप कीजे || केहे सुखदेवजी यूँ मोख लीजे || ६१ ||

जिसे परब्रम्ह कहते है । वही कर्तार है । वही सभी का स्वामी है । वह त्रिलोकी में जहाँ-तहाँ भरपूर भरा हुआ है । श्वांसो-श्वांस से,हर का जाप करो,तब मोक्ष मिलेगा । ||६१ ||

हिर्णा कुस जाय सो बोहो जोस कीया || दुज पास जाय के बर्दान लीया ||
सेवास पूजा बोहो बिध कीनी || तब दुज ऊठ के आसीस दीनी || ६२ ||

इसका भाई हिरण्यकश्यपु ने,भाई को मारने वालेपर बहुत क्रोध किया। उसने भी ब्रम्हा के पास जाकर वरदान लिया। इस हिरण्यकश्यपु ने बहुत तरह से सेवा,पूजा किया । तब ब्रम्हा ने उठकर आशिर्वाद दिया। ।। ६२ ।।

लो काट कंकर बारे न मांही ।। दिनो न राती तुज मोत नाही ।।
बर लेह दाणुं अब गांव आये ।। नव खंड मधे अब जुध लाये ।। ६३ ।।

आशिर्वाद दिया,की तुम लोहे से नही मरोगे,लकडी से नही मरोगे,पत्थर से नही मरोगे,दिन में नही मरोगे,रात में नही मरोगे(और तुम मनुष्यों के हाथों से भी नही मरोगे और जानवरों से भी नही मरोगे तथा बारह महीनों मे भी नही मरोगे),इस तरह का वरदान दिया। हिरण्यकश्यपु अपने गाँव(हिदोण)में आया। और वह नौ खण्ड पृथ्वी पर युद्ध करने लगा। ।।६३।।

चढ जोस जोई सब मांड घेरी ।। लिया भूप जीती जुगे आण फेरी ।।
मेरो नांव गावो सबे पुरस नारी ।। देऊँ रीज भोजा तुमे रेत म्हारी ।। ६४ ।।

उसके मन में जोश आकर,सारी पृथ्वी को घेर लिया। सारी पृथ्वी के राजाओं को जीत कर,अपनी आण दुहाई फिरा दिया। संसार के सभी स्त्री-पुरूष मेरे नाम की भजन करो,तुम्हारे उपर मैं खुश होकर,कृपा करूंगा। मैं इनाम,बख्शीस दूँगा। तुम मेरी प्रजा हो, मेरा नाम जपो । ।। ६४ ।।

कह राम कोई ताहे घेर मारूं ।। भरूं खाल भूसा नखा चीप सारूं ।।
जित्यो जुग सारो हवे देव जाही ।। करो जुध मोई मिलो काय आई ।। ६५ ।।

यदी कोई राम नाम लेगा,तो उसे पकड़कर मैं मारूंगा और उसकी चमड़ी में भूसा भरूंगा तथा उसके नाखूनों में चिप्पी ठोक दूंगा। इस तरह से सारे संसार को जीतकर,अब देवताओं की तरफ चला। और देवताओं से बोला,कि एक तो तुम मुझसे युद्ध करो,नही तो मुझसे आकर, मिलकर,मेरा बनकर रहो । ।। ६५ ।।

कयो इंद सुणो इसी बिध लोई ।। हरि हिरना कुस की पाट जोई ।।
कहे देव सारा सुणो इंद राई ।। रखो जोय आणी कया दुजो लाई ।। ६६ ।।

तब इन्द्रने कहा,सभी लोगों सुनो। हरी हिरण्यकश्यपुकी पटरानी चुराकर ले गये। हिरण्य कश्यपु की पाट( ),तब सभी देव बोले,राजा इन्द्र सुनो । आप इस हिरण्यकश्यपु की पत्नी,कयाधू को लाकर रखो । ।। ६६ ।।

तबे इंद बोले सुणो सरब देवा ।। आतो बिस्न भक्ता नहि काम अेवा ।।
रखो देव जतना देहो ग्यान जाई ।। कटे दिन याकां पावे सुख माई ।। ६७ ।।

तब इन्द्र ने कहा,कि सभी देवताओं सुनो । यह कयाधू तो विष्णू भक्त है । इसको हरण करके लाना,यह अपना काम नही है। इन्द्र ने कहा,यह हिरण्यकश्यपु तपश्या करने के लिए गया हुआ है। तब तक हे देवताओं,इस कयाधु को यत्न पूर्वक रखो। और उसे जा

जाकर ज्ञान बताओ ।(क्यों कि वह गर्भवती है,कयाधु को ज्ञान देने से,उसके गर्भ बालक ज्ञान सुनकर, भक्त उत्पन्न होगा और हिरण्यकश्यपु के तपश्या करके लौटने पर,कयाधु को उसके घर भेज दो ।)कयाधु को ज्ञान देने से,उसके दिन कट जायेंगे और गर्भस्थ बालक को भी अन्दर सुख मिलेगा । || ६७ ||

तबे रिष नारद नित चल आवे || बोहो ग्यान भेवा भेदं बतावे ||

तब देव कन्या ग्रभ आस होती || सुण ग्यान धाऱ्यो ग्रभ आप जोती || ६८ ||

तब नारद मुनी नित्य चलकर आते थे और कयाधु को ज्ञान सुनाते थे। देवकन्या (कयाधु)गर्भवती थी,उस नारद के ज्ञान को सुनकर,गर्भ के बालक ने धारण किया । और इस युवती ने (कयाधु ने)भी ज्ञान लिया । || ६८ ||

इन्द देव कन्या घर उलट मे ली || प्रहलाद जनमे नायत झेली ||

जुग दोय चोबीस इंद देव राखी || घर भेज दीजे कर देव साखी || ६९ ||

(फिर बाद में बाईस वर्ष तपश्या करके,हिरण्यकश्यपु घर पर आया ।)तब इन्द्र ने देवकन्या को(कयाधु को),घर भेज दिया ।(प्रल्हाद माँ के गर्भ में चौवीस वर्ष तक रहा ।)इन्द्र ने कहा,कि प्रल्हाद का जन्म,अपने यहाँ मत होने दो । चौवीस वर्ष तक कयाधु को इन्द्रने(अपने पास)रखा। अब इस कयाधु को उसके घर भेज दो। और देवताओं से कहा, कि तुम जाकर मेरी साक्ष दो,(कि यह निष्कलंक है।)इस तरह से कयाधु को देवताओं के साथ, हिरण्यकश्यपु के घर भेज दिया । || ६९ ||

या ग्रभ बालक येते नाही होई || हे जन पूरण सुण देव सोई ||

जन गत करन सुर मेल जाई || प्रहलाद जलमे उसर घर आई || ७० ||

इसके गर्भ का बालक यहाँ नही होगा। सभी देवताओं सुनो,इसके गर्भ का बालक पुरा जन (संत)है। ऐसा वह जन गती करनेवाला,देवताओं ने रख दिया। अब प्रल्हाद ने हिरण्य कश्यपु के घर जन्म लिया । || ७० ||

तब जख के घर होत बधाई || धिन दिन धिन भाग अब मुझ भाई ||

प्रहलाद जन्मंत सब हरषाणा || नर नार बस्ती उच्छ रंग व्काणा || ७१ ||

तब सभी राक्षसों के घर उत्सव होने लगा । हिरण्यकश्यपु कहने लगा,कि मेरा भाग्य धन्य है और धन्य है,आज का दिन और मैं भी धन्य हूँ । प्रल्हाद के जन्मने से सभी हर्षित थे । सभी स्त्री पुरूषों और बस्ती के सभी लोगों ने उत्सव किया। || ७१ ||

अबे बरस सात हुवा दोय जाणी || कह रिष कूं नित प्रहलाद आणी ||

द्यो ग्यान मोही अदभूत देवा || कहो जीव करता सब सीस भेवा || ७२ ||

प्रल्हाद नौ वर्ष का हुआ। और शंडामुर्का को प्रल्हाद नित्य कहता था,कि मुझे अद्भुत ज्ञान दो। जीवों का कर्ता कौन है,इसका मुझे भेद दो । || ७२ ||

तब रिष बोले त्रिलोक मांही || तुज बाप पिता सम कोय नाही ||

पढ़ एह ग्यानं सुण सुत आई ।। जुध जीत बाता या जुग मांही ।। ७३ ।।

तब शंडामुर्का ने कहा,कि तुम्हारे पिता के जैसा,इस त्रिलोकी में कोई भी नही है । तुम यही ज्ञान सीखो । इस संसार में युद्ध में जीतने की बाते,तुम सीखो । ।। ७३ ।।

तुम राज अंसा ओ ग्यान चहिये ।। जे समस्त ऊठे सब जीत लहिये ।।
हिरनाक कूं सो तबे सुण पायो ।। प्रहलाद कूं ततकाळ बुलायो ।। ७४ ।।

तुम राजा के अंश हो,तुम्हे तो यह ज्ञान सीखना चाहिए,कि यदी कोई समस्त लड़ाई करने के लिए उठा,तो उन सब को जीत लेना चाहिए। तब हिरण्यकश्यपु ने सुना,तो प्रल्हाद को तत्काल बुलाया। ।। ७४ ।।

पढ सुत बिद्या आ सुण भाई ।। सब वां कीमत तबे जम जाई ।।
प्रहलाद भणबा अब त्यार कीया ।। बोहो संग साथी अब लार लीया ।। ७५ ।।

हे पुत्र,यह विद्या सीखो और उसे सुनो,तब तुम्हारी मती जम जायेगी।( )और प्रल्हाद को विद्या सीखने के लिए तैयार किया। उसके साथ में उसके साथी,अपनी पाठशाला में लिए । ।। ७५ ।।

भणतास गुणता बहु दिन होई ।। आवे न जावे विद्या न कोई ।।
श्रीयास कु भारी मध सेर मांही ।। तां होय प्रहलाद पढवास जाई ।। ७६ ।।

सीखते–सीखते बहुत दिन हो गये । परन्तु प्रल्हाद को विद्या कुछ आती–जाती नही थी । (आयी ही नही),वहाँ शहर के बीच में श्रीयादे कुम्भारीन रहती थी । उसके घर के सामने से, प्रल्हाद नित्य पढ़ने जाता था । ।। ७६ ।।

वा ब्रम्हा भक्ता स रहे गोप सोई ।। हर जाप हिर्दे नित नेम होई ।।
उण अेक समे घड़ न्याव भाई ।। ताह मांय बिल्ली बच्चास ब्याई ।। ७७ ।।

वह श्रीयादे कुम्भारीन,ब्रम्ह की भक्ती करती थी। वह गाँव में गुप्त रहती थी।(अपनी भक्ती किसी को मालुम नही होने देती थी।)उसके हृदय में हरी की भक्ती थी। वह नित्य नियम से जाप करती थी। इस श्रीयादे ने एक बार,मिट्टी के बर्तन बनाकर,आवे में लगा दिया । उस आवे के अन्दर,बिल्ली ने बच्चा दिया था । ।। ७७ ।।

या मन मधे आवास लेसुं ।। तां दिन बच्चा छिछकार दे सुं ।।
दिन पांच पनरा बदीत होई ।। आवास चुणता याद न कोई ।। ७८ ।।

(आग लगी हुयी देखकर,बिल्ली के बच्चों की माँ(बिल्ली),आँवे के चारो और घुमती थी और म्याऊँ–म्याऊँ करने लगी,तब श्रीयादे को बिल्ली के प्रसुती होने की और आँवे के बर्तन में बच्चे रहने की याद आई।)पहले से श्रीयादे के मन में था,कि जिस दिन में आँवा लगाऊँगी,उस दिन बिल्ली के बच्चों को भगा दूँगी ।(परन्तु लगाते समय,उस बिल्ली के बच्चों की याद,श्रीयादे को नही रही।)उस बिल्ली को प्रसुती हुए बीस,दिन व्यतीत हो गये थे। और आँवा लगाते समय,श्रीयादे को बच्चो की याद भूला गयी। ।।७८।।

चुण न्याव पूँती गहे आग दीनी || तब सुध सोची चीत जीव लीनी ||
कर करणा तब वो बेण भाखे || सुण करता हर अे जीव राखे || ७९ ||

आँवा लगाकर,उसमें आग लगा दिया।(जब बिल्ली आँवे के चारो ओर घूम-घूमकर, म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी।)तब श्रीयादे को बिल्ली के बच्चों की याद आयी।(जीत जीव लीनी।)( )तब श्रीयादे करूणा कर करके,इस प्रकार वचन बोली,कि हे कर्तार सुनो । इन जीवों की रक्षा करो । || ७९ ||

देहे पर दिखणा डंडोत कीया || सत राम कहे जीव शिर सूंप दीया ||
श्रीयास मुख सु केहे राम भाई || तिण बार प्रहलाद ऊभोस आई || ८० ||

श्रीयादे ने प्रदक्षिणा देकर,दंडवत प्रणाम किया। सत्त राम नाम कहकर,ये जीव उसके सुपुर्द कर दिया। श्रीयादे के मुँख से जब राम नाम निकला,उसी समय प्रल्हाद श्रीयादे के मुँख से, राम शब्द सुनते ही,श्रीयादे के पास आकर खड़ा हो गया । || ८० ||

कर डकर धाकळ कहे बेण सोई || ते नाम लीयास सुण कोण होई ||
तब संत श्रींयास या मन धारी || अब आज छिपियाँ कुण गत म्हारी || ८१ ||

और डरा-धमकाकर प्रल्हाद बोला,कि तुमने जिसका नाम लिया वह कौन है?वह मुझे बताओ। तब श्रीयादे ने मन में यह रखा। और मन में बोली की,अब आज छुपकर रहने से मेरी क्या गती होगी ।(अब छुपकर रहने में भलाई नही है,क्यों कि छुपकर रहूँगी,तो रामजी की गुनाहगार होऊँगी। और सच्ची बात बताई,तो यह राक्षस मुझे मार डालेगा । तब रामजी की गुनाहगार होने अपेक्षा,राक्षस के हाथों मरना। इसलिए इस प्रल्हाद को सच्ची बात बता दूँ ,फिर बाद में कुछ भी हो ।) || ८१ ||

इण न्याव माही चुण जीव दीया || पेदा करंदा सो नाम लीया ||
प्रहलाद कहे सुण ऊं कोण होई || देहे भेद मोने के मारूं गोई || ८२ ||

श्रीयादे प्रल्हाद से बोली,कि(इस आँवे के मटके में बिल्ली के बच्चे थे ।) वे मटके इस आँवा में लगाकर,उसमें आग लगा दिया।(तो बिल्ली के बच्चों को बचाने के लिए ।) सभी को पैदा करने वाले का नाम,मैंने लिया । (इन बच्चों की रक्षा करने के लिए,प्रार्थना किया ।)तब प्रल्हाद ने कहा,तुम सुनो । वह पैदा करने वालो कौन है ? एक तो उसका भेद मुझे बताओ, नही तो,मैं तुम्हें मार डालूँगा । || ८२ ||

सुण राम रमता करतार कुवावे || जन भीड घाल्या ततकाल आवे ||
प्रहलाद बोले ओ न्यांव मोई || मो बिन आया काटे न कोई || ८३ ||

तब श्रीयादे ने कहा,कि वह राम रमता,सभी में रमन कर रहा हो । वही राम सभी का कर्ता है । जन(संत)उसे भीड़ी में डाला,उसकी तरफ दौड़ की,यानी उसकी पुकार करते ही,तत्काल आता है,तब प्रल्हाद ने कहा,कि मेरे आये बिना,यह आँवा कोई निकाले नही । || ८३ ||

दिन रेण अेकी सुण दोय भाया ।। आवास हेरत प्रहलाद आया ।।
हेरत हेरत अध बिच आया ।। तब संत श्रीया मन संक खाया ।। ८४ ।।

दिन–रात एक गया और दिन व रात भी गई । आँवा खोजते समय प्रल्हाद भी गया ।(वे मिट्टी के पके हुए बर्तन)खोजते बीच में आयी,तब संत श्रीयादे के मन संशय आया, कि(इस आग में बच्चे कहाँ से बचेंगे । और बच्चों के जिवीत नही निकलने पर,यह मुझे मार डालेगा ।)।।८४ ।।

हे राम हे राम या सुण लीजे ।। अे जीव राख्या बिन जीव दीजे ।।
हेरत हेरत चोफेर ड़ोरा ।। तब पाँच बामण अध बिच कोरा ।। ८५ ।।

तब श्रीयादे,हे राम–हे राम पुकार करके बोली,कि यह मेरी पुकार सुन लो । यदी बिल्ली के बच्चों को बचाये नही,तो यह प्रल्हाद मेरा जीव ले लेगा । खोजते–खोजते बीच में आई,तो अधबीच में,पाँच बर्तन(मटके)बिल्कुल कोरे निकले । ।। ८५ ।।

प्रहलाद आगे तबे आण मेले ।। देखेस मिनियाँ सत्त माह खेले ।।
तब संत प्रहलाद या उर धारी ।। सत राम रामा अवर बिकारी ।। ८६ ।।

(वे बच्चे मटके के अन्दर जिवीत देखते ही,श्रीयादे ने)मटके लाकर,प्रल्हाद के आगे रखा । प्रल्हाद ने देखा की,मटके के अन्दर बच्चे सच में खेल रहे है । तब संत प्रल्हाद ने,हृदय में धारण कर लिया,कि राम नाम' यह सत्त है और बाकी सभी बेकार है । ।। ८६ ।।

उर मांह दिळ अेह आ कीन आई ।। ज्या सीस ओ राम को मारे भाई ।।
जिण जीव राख्या इण आग सोई ।। सो सत खावंद मयेक होई ।। ८७ ।।

तब प्रल्हाद के मन में यकीन(विश्वास)हो गया और मन में सोचा कि,जिसके सिर पर यह राम नाम है,उसे कौन मार सकता है ।(ये बिल्ली के बच्चे तो खुद स्वयं,राम नाम तो जानते भी नही थे । वे दूसरे के राम नाम लेने से बचा लिए गये । फिर जो स्वयं राम नाम जानता है,उसका कोई क्या कर लेगा ।)जिस राम ने ऐसे आँवे में,आग से बच्चे बचा लिया । वही सत्त खावंद(मालिक)है,मैं उसका पक्का हूँ ।। ८७ ।।

हर नाम धरह प्रहलाद चाल्या ।। चट साल आणी सब बेद पाल्या ।।
को हो राम मारा निरधार सोई ।। सब बेद पिंडत झुठास होई ।। ८८ ।।

वहाँ से(श्रीयादे के घर से),हर नाम धारण करके,प्रल्हाद चला और पाठशाला में जाकर सभी बच्चे जो पढ़ रहे थे,उन्हे वो पढ़ना मनाकर दिया,प्रल्हाद सभी बच्चों से बोला,कि सभी लोग राम नाम बोलो,इस राम नामका सभी निर्धार(निर्णय)करके,मैंने लाया है । वही यह राम है । सभी विद्या और विद्या सीखाने वाला पंडित,ये सभी झूठे है । ।। ८८ ।।

चट साल माही या धुन होई ।। बोहो अलि गुंजे ज्युँ बाग सोई ।।
गणणाट भणणाट के एम फूटे ।। नर नार सुन कान सुख सीर छुटे ।। ८९ ।।

यह सुनकर पाठशाला में सभी बच्चे,राम नाम बोलने लगे । उसकी(राम नामकी)पाठशाला

में ध्वनी हो गयी। जैसे बहुत से भँवरे बाग में जमा होकर,गुंजार करते है,वैसे ही पाठशाला में गणगणाट–भनभनाट,ऐसा होने लगा। जो कोई स्त्री–पुरूष सुनता है। उसे सुख के शीरा (फव्वारे)छूटने लगे । || ८९ ||

केहे राम सारा व्हे धुन भारी || गुंजे सु जागा चट साल सारी ||
नर नार लोई सब चाल आवे || कांहा बेद धुन या इचरज क्‍ावे || ९० ||

सभी बच्चे राम नाम लेने लगे। उसकी भारी ध्वनी गूँजने लगी। उस पाठशाला की सारी जगह राम नामकी ध्वनी से गूँजने लगी। वहाँ सभी स्त्री–पुरूष चलकर आने लगे। और सभी को क्या वेद ध्वनी हो रही है,इसलिए आश्‍चर्य लगने लगा । || ९० ||

रिष उण बेल्या नही जाग माही || केहे नार पुरषा दुज मरम आई ||
तब सेंग सारा के हात जोडया || मारेस सुर देव मरजाद तोडयां || ९१ ||

(उस समय षंडामुर्का मास्टर स्कूल में नही थे,तब)सभी स्त्री–पुरूष आकर बच्चों से बोले,की इस नाम का तुम जाप करोगे,तो मास्टर आकर तुम्हे मारेंगे । तब सभी बच्चे, प्रल्हाद को हाथ जोड़कर बोले,की गुरू की मर्यादा तोड़कर,इस राम नामका जप करने से,मास्टर हमे मारेंगे । || ९१ ||

तम कंवर प्रहलाद हम रेत होई || हम मार देव तब नाही कोई ||
तब ऊँठ बोले प्रहलाद बाणी || मुझ मार तुम कूं मारेस आणी || ९२ ||

तब बच्चे बोले,की प्रल्हाद तुम तो राजकुमार हो और हम प्रजा है,जब(शंडामुर्का)मास्टर आकर हमे मारेंगे,तब हमारी सहायता करनेवाला कोई नही । तब प्रल्हाद उठकर खड़ा हुआ और बोला,पहले मुझे मारेगा,फिर बाद में तुम्हे मारेगा । || ९२ ||

ओ नाम जांको सो धर्म भारी || नहि मार सके तिर लोक सारी ||
को राम सारा डर मत राखो || तज बेद पाटी हल बेग भाखो || ९३ ||

प्रल्हादने कहा,यह जिसका नाम है,वह बहुत भारी धर्म है । यह राम नाम जो लेता है,उसे सारी त्रिलोकी(स्वर्गलोक,मृत्युलोक व पाताल लोक)तीनों लोक एक तरफ हो गये,तो भी नही मार सकते । सभी राम नाम बोलो,किसी का भी भय मत रखो । यह तुम लिखने की पाटी और वेद सीखना छोड़कर,पाटी छोड़ दो। और बेगी–बेगी राम नाम बोलो । ||९३ ||

अब सुण लड़का सब केण लागा || सब मधिमा सुं सुंण अेक भागा ||
दोडयोस चेटी रिष पास आयो || चटसाल को उन सब भेद गायो || ९४ ||

अब यह सुनकर,सभी बच्चे राम नाम भजने लगे । उन सभी बच्चो मे से एक लड़का,यह सुनकर–भागकर,मास्टर को बताने के लिए,दौड़ते हुए गया। बहुत जल्दी से दौड़कर, मास्टर के घर आया और स्कूल का हुआ सारा भेद,मास्टर से बताया । || ९४ ||

तज बेद पाटी कहे राम सोई || प्रहलाद लायो ओ पाट कोई ||
तब रिष जीमत ततकाल भागो || पोसाळ माहि राम धुन लागो || ९५ ||

(वह भागकर आया हुआ लड़का,मास्टर से बोला । सभी बच्चे वेद की पाटी छोड़कर,सभी के सभी लड़के,राम नाम ले रहे है,प्रहलाद ने यह पाठ कहाँ से लाया है । तब षंड़ामुर्का मास्टर खाते-खाते(हाथ धोये बीना,जूठे मुँह से)तत्काल भागते हुए,आकर देखता है तो,स्कूल मे राम नामकी ध्वनी लगी हुयी है । || ९५ ||

तब अेह धाकल रिष हाक किनी || या सिख तुमने कहो कुण दीवी ||
कर रीस भारी कहे बेण खाटा || तज अेह लवल्या गेहो हांत पाटा || ९६ ||

तब मास्टर सभी को धमकाकर,ऐसा कल्ला किया,कि ऐसी सीख तुम्हे किसने दी । वह बताओ। इस प्रकार सभी के उपर क्रोधित होकर,मुँह से सभी को खट्टे(कड़वे)वचन बोलने लगा और सभी से कहा,कि यह लवल्या(यह राम नाम लेना छोड़ो,ऐसा न कहकर ,यह लवल्या छोड़ो,ऐसा मास्टर बोला। क्यों की ये राक्षस लोग मुँख से राम नाम उच्चारण नही करते,इसलिए यह लवल्या छोड़ो,ऐसा मास्टर ने कहा। और आगे भी राम नाम बोलने का,जहाँ कही भी प्रसंग आयेगा,वहाँ यह मुँख से राम नाम न कहते हुए और कुछ कहेगा,यह लवल्या) छोड़कर,हाथ मे पाटी लो । || ९६ ||

प्रहलाद बोले सुणो रिष राई || पाटी जो झेला लिख राम माई ||
झगड़त झगड़त बोहो दिन होई || प्रहलाद रिष की माने न कोई || ९७ ||

तब प्रलहाद ने कहा,कि हे ऋषी सुनो,हम पाटी हाथ मे लेंगे,लेकिन उस पर राम नाम लिख दो।(हम राम नाम लेकर सीखेंगे,पाटी पर हमे राम नाम लिख दो।)इस तरह से प्रलहाद को मास्टर से झगड़ते-झगड़ते,बहुत दिन व्यतीत हो गये। प्रहलाद मास्टर का कहना कुछ मानता नही । || ९७ ||

तब रिष के मन बोहो रोस आया || बिंकराळ बिड रूप धर देह काया ||
देखत सब कूं मुर्छास होई || प्रहलाद बिन जिमु तज प्राण सोई || ९८ ||

तब मास्टर के मन मे बहुत क्रोध आया और षंड़ामुर्का मास्टर ने राक्षसी माया से,विकराल विद्रुप भयंकर देह धारण करके,प्रहलाद को ड़राने के लिए आया । उस विकराल रूप को देखकर,सभी मुर्छीत हो गये । सिर्फ एक प्रहलाद को छोड़कर,बाकी सभी लड़के मरने के जैसा होकर पड़ गये । जैसे उनमे कुछ प्राण नही रह गया । ऐसे हो गये । || ९८ ||

प्रहलाद ऊपर टटकार आया || तज अेह लवल्या के मारूं मो भाया ||
रिष दात जोड़ा बोहो बिध बाई || प्रहलाद मुसक्यो न चसक्यो न भाई || ९९ ||

(एक प्रहलाद सचेत रहा),उसके उपर दाँत कट-कटा कर आया। और प्रहलाद से बोला,(प्रहलाद राम नामका उच्चारण कर रहा था,उससे बोला),यह लावल्या छोड़ो,(राम नाम छोड़ो,ऐसा न कहते हुए,यह लावल्या छोड़ो,ऐसा बोला,क्यो कि राक्षस मुँख से राम नामका उच्चारण नही करते,इसलिए यह लवल्या छोड़,ऐसा बोला।)नही तो मै तुम्हे मारूँगा । षंड़ामुर्का मास्टर ने दाँत चबाकर,बहुत तरह से(कट्ट-कट्ट दाँत चबाने लगा

।)परन्तु प्रहलाद मुसक्यो न चसक्यो,बिल्कुल भी डरा नही । ।। ९९ ।।

रिष राय उलटा घर जाय बेठा ।। कोहो काहा कीजे प्रहलाद सेठा ।।
पोसाळ माहि हुई धुन भारी ।। फिर रिष ऊठे कोपंग बिचारी ।। १०० ।।

तब षंड्रामुर्का मास्टर,लौटकर घर जाने लगा। और मन मे कहने लगा,अब क्या करें । प्रहलाद बहुत धींठ जबरदस्त है। यह कुछ सुनता नही और मुझसे डरता भी नही । मास्टर के घर जाने पर,प्रहलाद सभी बच्चों को सचेत कर,लड़को से राम नामकी भजन कराने लगा।)उसकी पाठशाला मे बहुत भारी ध्वनी हुयी। तब फिर से षंड्रामुर्का ने कोप करके, विचार किया । ।। १०० ।।

बिकराळ बिकंटक अध भुत होई ।। रिष राय पोसाळ मावे न कोई ।।
देखत नर नार अड वड पाड़िया ।। घर जात पेली सुण ताव चड़िया ।। १०१ ।।

विकराल,विकंटक अद्भुत रूप धारण करके आया। वह मास्टर इतना विशाल बन गया,की पाठशाला मे समाता नही था। इतना बड़ा बन गया। उसे देखकर गाँव के भी स्त्री-पुरूष भागे। वे एक दूसरे के उपर गिर पड़े। वे गाँव के स्त्री-पुरूष अपने घर पहुँचने के पहले, ताप(बुखार)चढ़ गया । ।। १०१ ।।

प्रहलाद ऊपर रिष आण गुंजे ।। जुं इन्दं गाज्या त्यूं आण जूंझे ।।
जन संत सूरो कंपेन कोई ।। के रिष हम तम भोळास होई ।। १०२ ।।

फिर वह मास्टर,प्रहलाद के उपर आकर गूँजने लगा। जैसे बिजली की कड़कड़ाहत होती है और गरजने लगती है,वैसे ही प्रहलाद के उपर कड़कड़ा कर गरजने लगा। वह प्रहलाद जन शूरवीर संत,वह कुछ मास्टर से डरकर काँपा नही। और प्रहलाद मास्टर से बोला, कि तुम भोले हो । ।। १०२ ।।

मो सीस खावंद हे सत रामा ।। को मार सक्के सुं कुण रिष कामा ।।
प्रहलाद की मत दृढ़तास त्रारी ।। रिष राय चाले पचि उलट हारी ।। १०३ ।।

मेरे सिर पर मेरा मालिक सत्त राम है । मुझे कौन मार सकता है । यह तेरा क्रोध,मास्टर किस काम मे आयेगा। षंड्रामुर्का मास्टर ने,प्रहलाद की मती और दृढ़ता देखा और षंड्रामुर्का मास्टर पचकर-हारकर अपने घर चला गया । ।। १०३ ।।

रिष सांत बेळया यूं कोप कीया ।। प्रहलाद को मन नेक न बीया ।।
पच जुंझ रिष राय अब हार बेठा ।। मन सोच चित्त प्रहलाद सेठा ।। १०४ ।।

उस षंड्रामुर्का मास्टरने,सात बार ऐसा कोप किया,परन्तु प्रहलाद का मन थोड़ासा भी डरा नही । पचकर,जूँझकर मास्टर अब हारकर बैठ गया । और मन मे और चित्त मे मास्टर फिक्र करने लगा,की अब क्या करना चाहिए। प्रहलाद बहुत धींठ जबरदस्त है। ।।१०४ ।।

अब रिष ओ जाब कहे सुण आई ।। प्रहलाद भणिके केहुँ राज जाई ।।
प्रहलाद बोले तत्त काल जावो ।। तम सुं हुवे सो कर बेग लावो ।। १०५ ।।

तब षंड़ामुर्का मास्टर,प्रहलाद से ऐसा जबाब बोला,कि प्रहलाद तुम लिखना सीखो,नही तो राजा से(तुम्हारे पिता हिरण्यकश्यपु से)जाकर,मै कहता हूँ । तब प्रहलाद ने कहा,जाओ तत्काल बताओ,तुमसे जो होगा,जल्दी करो । || १०५ ||

तम झूठ झूठा हे बाप मेरा || हे राम साचा में पेक चेरा ||
प्रहलाद बोले कहुँ रिष तोई || बिन राम तेरी कुण गत होई || १०६ ||

तुम भी झूठे हो और मेरा बाप भी झूठा,मेरे रामजी सच्चे है,उस रामजी का मै पक्का चेला(चाकर)हूँ । इस तरह से प्रहलाद षंड़ामुर्का मास्टर से बोला । अरे मास्टर,राम नामके बिना, तुम्हारी क्या गती होगी । || १०६ ||

तब रिष के मन तन आग लागी || मुझ आड मरजाद सब आज भागी ||
कर रिष तामस अब पंथ धाया || हिर्णाकुस के दर्बार आया || १०७ ||

तब यह प्रहलाद का उल्टा उपदेश सुनकर,षंड़ामुर्का मास्टर के शरीर मे आग लग गयी । और बोला,मेरी आड़ और मर्यादा,आज सभी चली गयी ।(उल्टे यह प्रहलाद,मुझे उपदेश देता है, कि राम नाम लिए बिना,तुम्हारी क्या गती होगी । ऐसा कहते हुए,उलट उपदेस करने लगा,इसने मेरी आड़(मान मर्यादा)कुछ भी नही रखा।)तब षंडामुर्काने प्रल्हाद पर क्रोध करके रागावून(संताप करके),हिरण्यकश्यपू का दरबार के रास्ते पर दौड़ा व हिरण्य कश्यपू के दरबार मे आया ।|| १०७ ||

तब ऊठ राजा सन्मुख होई || धिन दिन धिन भाग कहो टेल मोई ||
आप पधारे कहो कुण काजा || आधीन अे बेण के सत्त राजा || १०८ ||

तब हिरण्यकश्यपु उठकर सामने आया और बोला,धन्य मेरा भाग्य और धन्य यह दिन,की आपने आकर दर्शन दिया । मुझे क्या टहल(सेवा)करने के लिए कहते है,वह बताईये । आप किस काम के लिए आये । वह काम मुझे बताईये । आधीन होकर,यह वचन हिरण्यकश्यपु राजा बोला । || १०८ ||

तब रिष बोले सुण बेण राई || प्रहलाद मरजाद माने न काई ||
तुमरी हमरी सब तोर डारी || केहे नाव शत्रु पोसाळ सारी || १०९ ||

तब षंड़ामुर्का मास्टर ने कहा,हे राजा,मेरे वचन सुनो । प्रहलाद मेरी मर्यादा कुछ भी नही मानता है। तुम्हारी मर्यादा और मेरी मर्यादा,सभी प्रहलाद ने तोड़ ड़ाली । पाठशाला के सारे बच्चे,शत्रु का नाम ले रहे है।(राक्षस अपने मुँह से राम का नाम नही लेते,इसलिए शत्रु का नाम लेते है,ऐसा बोला ।) || १०९ ||

सुण तब हिर्णाकुस कोपस कीया || रिष लार जोधा बलवान दीया ||
तब रिष केहे सुणज्यो सब कोई || हे राजा इनके बस न होई || ११० ||

यह सुनकर,हिरण्यकशपु ने,प्रहलाद के उपर कोप किया। और मास्टर के साथ,बहुत बलवान-बलवान योद्धा,भेजने लगा। तब षंड़ामुर्का मास्टर बोला,तुम सभी सुनो। षंड़ामुर्का

ने हिरण्यकश्यपु से कहा,हे राजा,प्रहलाद इन योद्धाओं के वश मे नही होगा। ||११०||

बोहो बिध हुन्नर मै सुण कीया || हुवा गज रीछ धर रूप लीया ||
बिकराळ बिन डोल अध भूत होई || प्रहलाद काप्यो न संक्यो न कोई ||१११||

मैने भी बहुत तरह के हुन्नर किए। वो सुनो । मैने बड़ा हाथी बनकर प्रहलाद को डराया । और बहुत बड़ा भालू बनकर भी उसे डराया,मैने विकराल बिनड़ोला(जिसका कोई ड़ोल नही,मुँख किसी तरफ,तो दाँत किसी तरफ और आँखे तरफ,किसी तो हाथ किधर और पैर किसी तरफ,ऐसा बिनड़ोल)अद्‌भुत बना,परन्तु प्रहलाद कांपा भी नही और ड़रा भी नही तथा मन मे संकोच भी नही किया । || १११ ||

अे बेण रिष का सुण तब लीया || तब भूप मन माय चित नेक बीया ||
जब भूप बोले सुण रिष राई || प्रहलाद सांझे दूँ समझाई || ११२ ||

ये मास्टर के वचन,हिरण्यकश्यपु ने सुन लिया । तब हिरण्यकश्यपु राजा मन मे थोड़ा ड़रा । तब हिरण्यकश्यपु राजा ने कहा,मास्टर तुम सुनो । प्रहलाद को मै आज समजा दूँगा ।(की मेरे शत्रु का नाम लेना,कैसा रहता है,यह मै प्रहलाद को समझा दूँगा ।) || ११२ ||

तुम दुख मानो मत कोय सोई || को राम को जूग जीवत मोई ||
रिष राय उलटे अब घर आया || प्रहलाद ऊपर हुवो कोप भाया || ११३ ||

तुम मन मे दुःख मत मानो,मेरे जीते जी संसार मे राम कौन है । और राम क्या वस्तु है । यह सुनकर षंड़ामुर्का मास्टर,पलटकर अपने घर आया । इधर हिरण्यकश्यपु ने प्रहलाद के उपर कोप किया । || ११३ ||

सब राज लोके आ बात होई || प्रहलाद हर नांव केहे राम सोई ||
सब सोच करके आ बात बूझी || प्रहलाद कूं कोहो काहा अेह सूझी || ११४ ||

यह बात सारे राजवाड़े मे और सभी लोगो मे भी,यह बात हो गयी । की प्रहलाद के उपर राजा ने कोप किया है ।(और ऐसा प्रण किया है,कि प्रहलाद को मारे बिना,अन्न-पाणी नही ग्रहण करूँगा। राजा ने ऐसा प्रण किया है।)प्रहलाद हर नाम(राम नाम)ले रहा है । और सभी लड़को से भी कहला रहा है। सभी की चिन्ता करके यह बात पूछी । और सभी बोले,कि प्रहलाद को यह क्या बात सूझी । || ११४ ||

हिर्णा कंस कूं सासो अन्न नाही खावे || कद सांझ होवे प्रहलाद आवे ||
तब माय कह कोऊ ततकाल जावो || प्रहलाद कूं कोहो घर नाहि आवो |११५|

हिरण्यकश्यपु को सांसा(फिकर)हो गयी। उसने अन्न खाना छोड़ दिया। और हिरण्यकश्यपु कहता है,कि कब सांझ होगी और प्रहलाद कब घर आयेगा ।(उस प्रहलाद को मारने के बाद ही,मै अन्न-पानी लूँगा। तो संध्या काल कब होगा और प्रहलाद घर कब आयेगा ।)तब प्रहलाद की माँ(कयाधु)बोली,कि कोई पाठशाला मे तत्काल जाओ और प्रहलाद से कहो, की,आज घर मत आये । || ११५ ||

तुम सीस पिता बोहो कोप कीया || अन पान का खण सुण राय लीया ||
प्रहलाद केहे घर जावो उलट सोई || के राय सेती हल बेग होई || ११६ ||

और प्रहलाद को जाकर कह दो,कि आज तुम्हारे पिता ने तुम्हारे उपर,बहुत कोप किया है और राजा ने अन्न खण(प्रण)लिया है। यह बात बांदी ने जाकर प्रहलाद से कहा,तो प्रहलाद बोला,कि तुम सभी पलटकर घर जाओ और राजा से कहो,कि एकदम जल्दी तैय्यार होओ । || ११६ ||

मैं ऊठ आहि ततकाल आऊँ || के माय सेती छिप काहाँ माऊँ ||
जा उलट पाछी ओ बेण भाखे || के माय सेती मत भे राखे || ११७ ||

मै यहाँ से उठकर तत्काल आता हूँ । और मेरी माँ से भी कहो,कि मै छुपकर अब कही समाऊँगा नही । तुम जल्दी लौट जाओ । इस तरह से प्रहलाद दासीयों से बोला । और मेरी माँ से कहो,कि तुम कोई डर मत रखो । || ११७ ||

मै सरण जाकी सो साम अेवा || तिरलोक करता सब सेंग देवा ||
कह माय कूं जाय मत सोच राखो || प्रहलाद लेवे सुण नांव वाको || ११८ ||

मैने जिसकी शरण ली है,वह स्वामी ऐसा है,कि वह त्रिलोकी का कर्ता(करनेवाला)है । और सभी देवताओं का भी कर्ता है । और मेरी माँ से जाकर कहो,कि तुम फिक्र तो करो ही मत । और सुनो,प्रहलाद तो उसका नाम ले रहा है । || ११८ ||

तब ऊठ बांदी माँ पास आई || तम बात प्रहलाद मन नाहि भाई ||
केहे बेण अेवा नेह तोड़ सारा || प्रहलाद कूं कुछ भयो हे बिचारा || ११९ ||

तब बांदी(दासी)प्रहलाद के माँ के पास आयी और बोली,कि तुमने जो बात बताया थी,वह प्रहलाद के मन को नही भायी । वह प्रहलाद तो ऐसे वचन बोलता है,सब नेहे तोड़(बिन मुलाहिजा । किसी का भी मुलाहिजा न रखते हुए ।) ऐसे सब वचन बोल रहा है,दासी बोली, प्रहलाद को,कुछ न कुछ हो गया है । || ११९ ||

मे दिष्ट देखी हेरान होई || प्रहलाद बोले सुण ओर कोई ||
हे रानी हे रानी सुण जाब अेवा || काहा भूप राजा अदभूत भेवा || १२० ||

राणी,मै प्रहलाद को दृष्टी से देखकर हैरान हो गयी,की यह प्रहलाद बोल रहा है ।(प्रहलाद तो ऐसा बोलता नही था । यह और कोई दूसरा ही बोल रहा है । इसलिए हे राणी,मै हैरान हो गयी,हे राणी,मै उसका ऐसा जबाब सुनकर हैराण हुयी।)उसके आगे तो कहाँ भूप हिरण्यकश्यपु राजा) । उसका तो अद्भुत भेद दिखाई देता है । || १२० ||

बोलत असो तप तेज माई || हे रानी ता सीस ज्युँ कोय नाहिं ||
केहे केहे राम इण बिध सोई || हे रानी मे देख हेरान होई || १२१ ||

वह प्रहलाद ऐसे बोलता है,उसमे तप और तेज,उसके बोलने मे,बहुत भारी दिखाई देता है । हे राणी,जैसे उसके सिरपर मालिक कोई नही है । (ऐसा वह बोल रहा है ।)(वह,अपने

उपर हिरण्यकश्यपु है,ऐसा कुछ समझता ही नही ।) सभी के सभी राम,इस विधी से बोल रहे है । हे राणी,मै तो देखकर हैरान हो गयी । || १२१ ||

सुण राणी अे बेण बोहो सोच कीयो || प्रहलाद कूं भेव किण ग्यान दीयो ||
तब सोच राणी या सुध कीवी || मन मांहि जाण्यो श्रीयास दीवी || १२२ ||

कयाधू राणी ने यह बात सुनकर,बहुत चिन्ता किया और सोचा,कि प्रहलाद को यह भेद और यह ज्ञान किसने दिया । फिर राणी ने सोचकर यह सुध की और मन मे जाना,कि यह ज्ञान श्रीयादे ने जरूर दिया है,(कयाधू को मालुम था,कि श्रीयादे भी भक्त है । उस शहर मे श्रीयादे को छोड़कर,दूसरा कोई आज्ञा देने वाला नही है ।) || १२२ ||

अब सांझ होई प्रहलाद ध्याया || श्रीयास देके घर पास आया ||
मे शिष तुम गुर दे सीख मोई || हे राम केसा कुण जाग होई || १२३ ||

अब संध्या का समय हुआ,तब प्रहलाद घर जाने के लिए निकला और श्रीयादे के घर के पास आया। श्रीयादे से प्रहलाद ने कहा,कि मै तो तुम्हारा शिष्य हूँ और तुम मेरे गुरू हो। अब मुझे तुम उपदेश दो । उसने कहा,कि वह राम कैसा है और किस जगह है ।||१२३||

श्रीयादेवी वाच ||

दिष्टोन मुष्टो घर ठाम नाही || जिम पोप बासें सब घट मांहि ||
धर प्याळ आकास भ्रपूर बारे || बिन छेह बिन थाह हे राम सारे || १२४ ||

श्रीयादे ने कहा,कि वह राम दृष्टी से दिखाई नही देता है और मुट्ठी मे पकड़ा नही जाता है । तो जैसे फूल मे सुगंधी रहती है,(वह सुगन्ध आँखो से दिखाई नही देती और मुट्ठी मे पकड़ी नही जाती,वैसे ही वह राम सर्वव्यापी है ।)वह राम सभी घट मे है । वह धरती,पाताल और आकाश मे सर्वत्र और आकाश के बाहर भी भरपूर है । उसका अन्त भी नही और थाह भी लगता नही है,वह राम सर्वत्र सर्वव्यापी है । || १२४ ||

जर खाण इण्ड खाण उद बुद होई || नर खाण प्रगट हे राम सोई ||
सुण भेव वां को कहुँ तुज मोई || प्रहलाद वा सम अवर न कोई || १२५ ||

वह जरा खाण मे,अंड खाण मे और उद्भिज खाण मे,मनुष्य खाण मे वह प्रगट होता है । वही,वह राम है । उसका सारा भेद,मै तुम्हे बताती हूँ । वह सब सुनो । हे प्रहलाद,उसकी बराबरी मे कोई भी नही । || १२५ ||

कहुँ भेद जूनो डर मत राखे || प्रहलाद निर्भे होय बेण भाके ||
आगे स हिर्णाक सुण भूप बागो || सो धरण ऊँधी करणेस लागो || १२६ ||

मै तुम्हे पहले का,एक पुराना भेद बताती हूँ ,तू भय कुछ मत रखो,प्रल्हाद निर्भय है,ऐसा बोलने लगा । तब श्रीयादे ने कहा,तुम्हारे बड़े चाचा पहले हिरण्याक्ष राजा हो गये,वह हिरण्याक्ष पृथ्वी को उलटने लगा । || १२६ ||

तब हर बाराह सुण रूप धाऱ्यो || वा अंग प्रगटे उण सायत माऱ्यो ||

फिर सुण संखा बेद हरिया ।। ता बेर मछ कछ अवतार धरिया ।। १२७ ।।

तब इस हरी ने सूअर का रूप धारण किया। वे उसके ही(हिरण्याक्ष के ही)शरीर से प्रगट होकर,उससे उसी समय,हजार वर्ष तक युध्द करके,उसे मार डाला। और भी एक शंखासुर ने ब्रम्हा का वेद चुरा लिया,उस समय उसने मछली का अवतार लिया ।।१२७।।

सुण स्याय घाटे तब मऱ्योड़ डाऱ्यो ।। ओ नांव प्रहलाद काहुँ नाहि हाऱ्यो ।।
हे बोत गाथा सुण राम भारी ।। प्रहलाद मान सत्त बात मारी ।। १२८ ।।

वो सुनो,उस संखासुर को मरोड़ कर,घाटपर डाल दिया ।(तब से शंख मरोड़ हुआ । एक हाथ से उसका मुँख पकड़ने से,मुँख मे अँगुलियों के चिन्ह और दूसरे हाथ से मरोड़ने से ऐंठा हुआ, सभी शंखो मे उत्पन्न होने लगा। परन्तु एक शंख को मरोड़ने से,सभी शंख कैसे ऐठे गये। शंख समुद्र मंथन के समय,चौदह रत्नों मे से और समुद्र मंथन मे से,लक्ष्मी भी निकली थी, उसी लक्ष्मी ने शंखानुसार को उत्पन्न किया था।)हे प्रहलाद,यह नाम कही भी आज तक हारा नही। हे प्रहलाद,इस राम नाम की गाथा तो बहुत भारी है,यह राम नाम बड़ा भारी है। प्रहलाद,तुम मेरी सारी बाते मान लो । ।।१२८।।

प्रदिखणा दे डंडोत कीया ।। अब पाव प्रहलाद घर दिस दीया ।।
अब राज लोक माँ पास आया ।। तिण बेर हिर्णाकुस सुणज पाया ।। १२९ ।।

तब प्रहलाद ने,श्रीयादे को प्रदक्षिणा देकर,उसे दंडवत प्रणाम किया । अब प्रहलाद ने,घर की तरफ पैर डाला। वह राजलोक मे माँ के पास आया। तब हिरण्यकश्यपु ने,प्रहलाद के आने की खबर सुनी । ।। १२९ ।।

सुण राज राणी सुण दोड़ आई ।। देहे सीख प्रहलाद कूं अेह बेन भाई ।।
हे कंवर हे कवर तज अेह बाणी ।। -------------- ।। १३० ।।

तब राजा की सभी राणीयाँ दौड़कर आयी और उस प्रहलाद को सभी सीखाने लगी और बोली,कि हे राजकुमार,हे राजकुमार,तुम यह जो मुँह से बोल रहे हो,यह नाम लेना छोड़ दो।(राम नाम लेना छोड दे,ऐसा न कहते हुए,ऐसा बोली,की,यह तू जो बोल रहा है,यह नाम लेना छोड दे,ऐसे बोली । क्यो कि राक्षस मुँख से राम का नाम नही लेते है ।)ये सारे संसार के लोग जो नाम लेते है,वही नाम तुम भी लो । ।। १३० ।।

ले मांड सारी सो नाम लीजे ।। हे पुत्र प्रहलाद ओ छोड दिजे ।।
तम बाप पिता को नाम होई ।। हे पुत्र प्रहलाद ले सब कोई ।। १३१ ।।

ये सारी दुनिया के लोग,जो नाम लेते है,वही नाम तुम भी लो । सारे जगत के लोग तुम्हारे पिता का नाम लेते है,तुम भी उसी का नाम लो । हे पुत्र प्रहलाद,तुम ये सारे नाम छोड़ दो । (ये नाम छोड़ दे,ऐसा बोली,परन्तु राम नाम छोड़ो,ऐसा नही बोली ।)तुम्हारे पिता का जो नाम है,हे पुत्र प्रहलाद,तुम्हारे पिता का ही नाम,सभी जन जपते है।।१३१।।

तुम राय के पुत्र हो ईधकारी ।। सो आज बिगड़े सुण बात थारी ।।

हे पुत्र पुत्र तज राम दीजे ।। सुण तोहि पिता को नाम लीजे ।। १३२ ।।

तुम राजा के राजपुत्र,राजगद्दी के अधिकारी हो । वही आज तुम्हारी बात सुनकर,तुम्हारा युवराजपणा बिगड़ रहा है । हे पुत्र,तुम यह राम नाम छोड़ दो । तुम सुनो । तुम,तुम्हारे पिता का ही नाम लो । ।। १३२ ।।

कह राव राणी सुण गत सारो ।। सो नाम प्रहलाद क्यूं नाहिं धारो ।।
तुम कुं हम बिन क्युँ कर समझ आई ।।ओ नावं हम कब सुणियो न भाई ।१३३।

सभी तुम्हारे पिता की गती जानकर,उसका नाम लेते है । वही नाम(तुम्हारे पिता का),तुम क्यों नही धारण करते हो। अरे,तुम्हे हमारे शिवाय,यह समझ कहाँ से आयी,यह जो तुम नाम ले रहे हो,वह नाम तो हमने पहले कभी सुना नही ।(मुँख से राम नाम न कहते हुए,तुम जो नाम लेते हो,ऐसा बोली,परन्तु राम नाम मुँख से नही बोली ।)।। १३३ ।।

प्रहलाद वाच ।।

पहलाद बोले तुम काहां जानो ।। ओ नांव करतार मो मन भानो ।।
आकास पाताळ हर नांव टेके ।। मांह न बारे भ्रपूर देखे ।। १३४ ।।

तब प्रहलाद ने कहा,कि इस नाम का महत्व तुम क्या जानते हो । यह नाम सारे जगत का करतार है। यह मेरे मन मे माना हुआ है। आकाश और पाताल सब,इस हर नाम के टेके से है । वह अंदर भी नही और बाहर भी नही,उसे मै भरपूर देखता हूँ । ।। १३४ ।।

तम निपट भोळी घर जाय बेसो ।। हो जात बेगम क्या सीख देसो ।।
तब रोस करके सब उलटे चाली ।। केहे माय सेती देहो तम पाली ।। १३५ ।।

तुम तो एकदम भोली हो,तुम्हे कुछ भी समझ मे नही आता है। तुम अपने घर जाकर बैठो। तुम्हारी जाती ही बेगम,यानी तुम्हे किसी चीज की भी गम(जानकारी)नही,ऐसी तुम्हारी जाती बेगम है,तुम मुझे क्या ज्ञान बताती हो। तब सभी राणीयाँ क्रोध मे आकर, लौटकर जाने लगी। और प्रहलाद की माँ से कहा,कि तुम्ही प्रहलाद को यह नाम लेने के लिए,मना कर दो। और उसे समझा दो । ।। १३५ ।।

माता उवाच ।।

हे पुत्र प्रहलाद सुण बात म्हारी ।। आ प्रम भक्ति निभे नहि थारी ।।
सुन आज तोय बाप जोरेस होई ।। नहि कर सक्के आ भक्त कोई ।। १३६ ।।

तब प्रहलाद की माँ ने,प्रहलाद से कहा,कि हे पुत्र प्रहलाद,तुम मेरी बात सुनो । यह परम भक्ती तुम्हारी निभ नही पायेगी । आज तुम्हारे पिता जोर मे है । तुम्हारे पिता जोर मे होने से, यह भक्ती कोई नही कर सकता है । तु यह नाम ले रहा है ।। १३६ ।।

लो गोप हिरदे हर नांव धारी ।। हे पुत्र प्रहलाद सुण सिख म्हारी ।।
जे लाडु पायो तो गोप खईये ।। हे पुत्र प्रगट कहि कुं कहिये ।। १३७ ।।

तो यह नांव गुप्त रूप से हृदय मे धारण कर लो । हे पुत्र प्रहलाद,मै कहती हूँ ,वह मान लो । यदी लड्डू मिला,तो उसे गुप्त रूप से ही,छुपकर खाना चाहिए,हे पुत्र प्रहलाद,प्रगट

किस लिए कहना। (छिपकर,चुपचाप किसी को न बताते हुए,खा लेना चाहिए) ।।१३७ ।।

मन माहे समझे सो पूत सेणा ।। करे झोड़ बारे सो नीच केणा ।।
बुध हीण की सुण अेह बात होई ।। के बक बारे देहे भ्रम खोई ।। १३८ ।।

हे पुत्र,जो मन मे समझ जाता है,वही पुत्र सयाना है। और बाहर झोड़ (जिक्र करके बताता है।)उसे नीच कहते है। बाहर बताना यह बुद्धिहीन की बात। वह मुँह से बककर बाहर बताता है। वह अपना भ्रम गवाँ देता है। ।। १३८ ।।

बक बाद बेधो सुण काय कीजे ।। हे पुत्र अवरा किम दुख दीजे ।।
ओहि नांव मेरे हिरदेस होई ।। सुण पुत्र मो जाळ जाणे न कोई ।। १३९ ।।

हे पुत्र,बकवास और बेधा(गलबला)किसलिए करना। हे पुत्र,मुँख से बोलकर,दूसरे को दुँख किसलिए देना। यह जो तुम नाम लेते हो,वही नाम मेरे भी ह्रदय मे है। प्रहलाद पुत्र,सुनो । मेरा जाप कोई भी नही जानता है।(की यह कयाधु नाम जप करती है,यह मेरा जाप किसी को भी,बाहर मालुम नही पड़ा।) ।। १३९ ।।

प्रहलाद उवाच ।।

हो माय ओ बेण मो मन भायो ।। तम पास क्यां सूं किण रीत आयो ।।
कोहो रीत गुरदेव सुण कोण होई ।। हे माय धिन भाग कोहो भेव होई ।।१४० ।।

तब प्रहलाद ने कहा,हे माता,यह तुम्हारा बोलना,मुझे बहुत अच्छा लगा। यह राम नाम तुम्हारे पास कहाँ से और किस रीती से आया। वो मुझे बताओ। और तुम यह सारी रीती मुझे बताओ। तुम्हारे गुरू कौन है। वह रीत सभी मुझे बताओ,हे माता,तुम्हारे भाग्य धन्य है,वो सभी भेद मुझे बताओ। ।। १४० ।।

माता उवाच ।।

हे सुत सब तोहे कहुँ बोहोत गाथा ।। काहां लग कहिये सुण सेंग बाता ।।
इंद देव मो कुं हर लेर ग्याथा ।। तूं ग्रभ था सुत सुण अेह ब्याथा ।। १४१ ।।

हे पुत्र,तुम्हे सब बाते,मै कहाँ लग बताऊँ। वो सब गाथा बहुत है,इन्द्र देव मेरा हरण करके, मुझे ले गये थे। उस समय तुम मेरे गर्भ मे थे। वो बात तुम सुनो ।। १४१ ।।

नारद मुनि वां ग्यान दीयो ।। सो सुण हिरदे मै धार लियो ।।
नारद मुनि गुरदेव कुवाया ।। ओ नांव मो पास इण रीत आया ।। १४२ ।।

नारद मुनी ने,वहाँ मुझे ज्ञान दिया। वो नारद मुनी का ज्ञान सुनकर,मैने ह्रदय मे धारण कर लिया। इस तरह से मेरे गुरू नारद हुए। यह नाम मेरे पास इस रीती से आया। ।१४२।

प्रहलाद उवाच ।।

धिन माय धिन भाग धिन आप होई ।। हो माय ओ नांव करतार मोई ।।
ओ नांव ज्यां पास सो काय बीये ।। हो माय ध्रिकार पत छोड जीये ।। १४३ ।।

प्रहलाद बोला,हे माँ,तुम धन्य हो, धन्य तुम्हारे भाग्य और भी धन्य है,हे माँ,यह नाम सभी का करतार(करनेवाला)है । यह नाम जिसके पास है,वह किसी से भी किसलिए ड़रेगा ।

तुम्हे धिक्कार है,कि इस नाम की पत छोड़कर जिवीत हो । || १४३ ||

काहा अब तुम कूं कहियेस आई || हो माय ध्रिकार पत छोड क्याही ||
सुण जात नारी भावेस होई || पत छाड़ खावंद के नाहि लोई || १४४ ||

अब मै,तुम्हे क्या आकर बताऊँ। हे माँ,तुम्हे धिक्कार है,कि तुम पत छोड़नेवाली कहलायी । तुम सुनो,स्त्री जाती को कैसा भी रही,तो भी वह पत छोड़कर,दूसरे को मालिक नही कहेगी । || १४४ ||

सुण गोप बिणजे सो चोर होई || हो माय माहा जुग लुकियो न कोई ||
जो माय बरज्या रेवेस कोई || तो सुण कारज पक्के न कोई || १४५ ||

और भी सुन। जो गुप्त व्यापार करेगा,वह चोर है। हे माँ,संसार मे कोई भी साहुकार, छुपकर बैठा नही रहा। यह जो कोई दूसरे के मना करने पर मानेगा। उसका कार्य पक्का नही होगा। तो सुनो || १४५ ||

माता उवाच ||

हे पुत्र प्रहलाद सोइ बाव बाजे || तिण बेर तेसी सुण सरण छाजे ||
ज्या बेर जाकी सो ओट गहिये || सुण रेण मध रवि काय कहिये || १४६ ||

माँ ने कहा,कि हे पुत्र प्रहलाद,जिस समय जैसी हवा रहे,उस समय वैसी ही शरण लेना, शोभा देगा। जिस समय जिसका समय रहे,उस समय उसी की आश्रय लेनी चाहिए। हे प्रहलाद सुनो,रात के समय सुर्य किसलिए कहेंगे । || १४६ ||

प्रहलाद उवाच ||

हो माय दीन सूर सरणो केहे रात चंदो || धरणीस केता दिन रात बंधो ||
सिंह घास खाता सुणियो न कोई || दस पांच लंघण भावेस होई || १४७ ||

प्रहलाद ने कहा,दिन मे सुर्य की शरण और रात मे चन्द्रमा की लेने के लिए कहते है,दिन रात से बंधा है। सिंह को घास खाते हुए,किसी ने देखा नही। सिंह को दस पाँच लंघन (उपवास) कितने भी हो गये,तो भी सिंह घास नही खायेगा। || १४७ ||

खज छाड़ दूजो खायो न जावे || पत छाड़ बोले वा झूट कवावे ||
कुळ सेंग लाजे सुण गोत सारो || हर बिन हो माय युं जन्म हारो || १४८ ||

तो भी सिंह से अपना खाद्य छोड़कर,दूसरा कुछ भी नही खाया जायेगा। जो स्त्री पत छोड़कर बोलती है,उसे झूठी कहते है। उस स्त्री के सब कुल भी लजायेंगे और उसके सब गोत्र भी लजायेंगे,हे माँ,हरी के बिना ऐसा जन्म हारते है । || १४८ ||

गेहराव सरणो सुण ओर कोई || हो माय तांकू पट्टा न होई ||
जो जीव जावे तो जाण दीजे || हो माय दुजो सरणो न लीजे || १४९ ||

राजा की शरण छोड़कर,कोई दूसरे की शरण मे जायेगा,तो उसे जहाँगीरी नही मिलेगी । तो हे माँ,जीव जायेगा तो जाने दो,परन्तु दूसरे की शरण मत लो । || १४९ ||

ध्रिगताही ध्रिग ताहि हर जाप छाडे || हो माय खुनी कहाँ मुख काढे ||

सुण काम भेळा दोऊ एक जाणे ।। हो माय ताकूं कोहो कोण माने ।। १५० ।।

उसे धिक्कार है,जो हर नाम का जाप करना छोड़ेगा। उसे धिक्कार है। हे माँ,वह खूनी (अपराथी)कहाँ मुँख निकालेगा(दिखायेगा)। सुनो,दोनो काम एक जगह जानेगा ।(जैसे तुम हर नामका भी जाप करती हो और इधर हिरण्यकश्यपु को भी मानती हो,इस तरह से दोनो काम एक ही जगह जानती हो ।) तो दोनो काम माननेवाले को,कौन मानेगा (जैसे इधर पती की पत्नी बन कर रहती है और उधर दूसरे से व्यभीचार करती है,ऐसी पत्नी को उसका पती मानेगा क्या ।) ।। १५० ।।

मै राम छाडू तो राम द्राई ।। गुरदेव लाजे हर बिड़द मांहि ।।

तम मोही अे जाब कब नाहि केणा ।। हो माय हर कूं ऊँ जाब देणा ।। १५१ ।।

मै राम की शपथ लेकर कहता हूँ,राम नाम मै कोई छोडूँगा नही। और यदी राम नाम छोड दिया,तो मेरे गुरू लजायेंगे। और राम के बिड़द मे तुम मुझे यह जबाब(राम नाम छोड़ने के लिए),कभी भी मत कहना। हे माँ,हर(रामजी को)वहाँ जबाब देना है । ।।१५१।।

।। इति ग्रंथ भक्तमाल संपूरण ।।